

क़यामे इमाम हुसैन (अ.स.)

ग़ैर मुस्लिम बुद्धिजीवियों की नज़र में

हिन्दी तरजुमा

सैय्यद अब्बास इरशाद नक़वी

## अर्ज नाशिर

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने 61 हिजरी में जो कुर्बानी बारगाहे खुदा में पेश की थी वह कोई हादसा नहीं था बल्कि एक मौजिज़ा थी।

हादिसे और मौत में फ़र्क है, हादिसा कुछ दिन या कुछ साल गुज़रने के बाद अपना असर खोने लगता है और फिर सदियाँ गुज़रने के बाद दिलो दिमाग से गायब हो जाता है मगर मौजिज़ा साल या सदियों से मुतास्सिर नहीं होता बल्कि हर साल और हर सदी में अपनी आबो ताब को कायम रखते हुये दिलो दिमाग को रौशन रखता है।

वाक़या-ए-करबला एक मौजिज़ा है और इसके मौजिज़ा होने का एक यही सबूत काफ़ी है कि जैसे-जैसे वक़्त गुज़रता जा रहा है इस वाक़िये की अहमियत और इसके असरात दिलो दिमाग को और रौशन करते जा रहे हैं।

इमाम हुसैन (अ0) ने चूँकि मुख्तलिफ़ क़ौम और कबायल के लोगों के साथ मैदाने करबला में इस्लाम और आलमे इन्सानियत को बचाने के लिये कुर्बानी दी थी यही वजह है कि आज भी हर क़ौम और क़बीले के लोग करबला के इस मौजिज़े से मुतास्सिर होते रहते हैं।

आप के सामने जिस किताब को पेश किया जा रहा है वह इसी बात का सबूत है कि किस तरह से हिन्दू, सिक्ख, ईसाई और दूसरे ग़ैर मुस्लिमीन ने इस मौजिज़ा-

ए-शहादते इमाम हुसैन (अ0) को महसूस किया और अपने ख्यालात का इज़हार करते हुए इमामे आली मक़ाम को ख़िराजे अक़ीदत पेश किया।

इस किताब को उर्दू में शायी किया जा चुका है लेकिन चूंकि आज की नौजवान नस्ल हिन्दी ज़बान को आसानी से समझती है इसलिये इस किताब का हिन्दी तर्जुमा "इमाम हुसैन (अ0) ग़ैर मुस्लिमों की नज़र में" अब आप की ख़िदमत में पेश है।

## ईसाइयों का खिराजे अक़ीदत

### मिस्टर जान लिविंग

इमाम हुसैन (अ0) दीनदार खुदा परस्त, फ़रोतन और बेमिस्ल बहादुर थे। वो सल्तनत और हुकूमत के लिये नहीं लड़े बल्कि खुदा परस्ती के जोश में यज़ीद से इसलिये बेज़ार थे कि वो इस्लाम और दीने मोहम्मदी के खिलाफ़ था।

### मिस्टर वाशिंगटन औरंग

10 मोहर्रमुल हराम 61 हि0 मुताबिक़ 3 अक्टूबर 685 ई0 इस लाजवाब लडाई की तारीख़ है। कई हज़ार फ़ौज के साथ लडने में बहतर आदमियों का ज़िन्दा रहना मुहाल था। ज़िन्दगी तलफ़ हो जाने का यक़ीने कामिल था। निहायत आसानी से मुमकिन था कि हज़रत इमाम हुसैन (अ0) यज़ीद से उसकी तमन्ना के मोआफ़िक़ बैअत करके अपनी जान बचा लेते मगर इस ज़िम्मेदारी के ख़याल ने जो एक मज़हबी मुस्लेह की तबियत में होती है इस बात का असर न होने दिया और आपको निहायत सख़्त मुसीबत और तकलीफ़ पर भी एक बेमिस्ल सब्र व इस्तेक़लाल के साथ कायम रक़्खा। छोटे-छोटे बच्चे का क़त्ल, ज़ख़्मों की तकलीफ़, अरब की धूप, उस धूप में ज़ख़्म और प्यास ये ऐसी तकलीफ़े न थीं जो सल्तनत

के शौक में किसी आदमी को सब्र के साथ अपने इरादे पर कायम रहने दे। (अंजाम कराची)

### मिस्टर कारलायल

(मुसन्निफ़ हीरोज़ एण्ड हीरो वरशिप)

आओ हम देखें कि वाक़ेए करबला से हमें क्या सबक़ मिलता है। सबसे बड़ा सबक़ यह है कि शुहदा-ए-करबला को खुदा का कामिल यक़ीन था। इसके अलावा उनसे क़ौमी ग़ैरत और हमीयत का बेहतरीन सबक़ मिलता है जो किसी और तारीख़ में नहीं मिलता।

वो अपनी आँखों से इस दुनिया से अच्छी दुनिया देख रहे थे। एक नतीजा यह भी हासिल होता है कि जब दुनिया में मुसीबत और ग़ज़ब वग़ैरह बहुत होता है तो खुदा का क़ानून कुर्बानी मांगता है। इसके बाद तमाम राहें साफ़ हो जाती हैं। (अंजाम कराची)

### मिस्टर जेम्स काकरन

(मुसन्निफ़ तारीख़े चीन)

दुनिया में रूस्तम का नाम बहादुरी में मशहूर है लेकिन कई शख्स ऐसे गुज़रें हैं जिनके सामने रूस्तम का नाम लेने के काबिल नहीं।

बहादुरी में अक्वल दरजा हुसैन इब्ने अली (अ0) का है। क्योंकि मैदाने करबला में रेत पर तशनगी और भूक की हालत में जिस शख्स ने ऐसा काम किया हो उसके सामने रूस्तम का नाम वही शख्स लेगा जो तारीख से वाकिफ़ न हो। (अंजाम कराची)

## मिस्टर आरथर एन-विस्टन

(सी-आई-ए)

इमाम हुसैन अ0 सब्र व इस्तेक़लाल और अखलाख के वो आला जौहर और कमालात मौजूद थे जो आम इन्सानो में नहीं पाये जाते हैं। इस लिये इमाम हुसैन अ0 की ज़ात खुद एक मौजिज़ा है। इमाम हुसैन अ0 की बहादुरी और शुजाअत की मिसाल शायद ही दुनिया कभी पेश कर सके। अक़वामें आलम की तारीख कभी कोई ऐसा सूरमा न पेश कर सकी जो हज़ारों से यक्को तन्हा लडा हो और ब-रज़ा-व-रग़बत मरने पर तैयार हो गया हो। (हुसैनी पैग़ाम)

## मिस्टर परमेल पीटर प्रेग

इमाम हुसैन अ० की तारीखी हैसियत हम पर एक बार और ये अम्र ज़ाहिर करती है के कोई न कोई खुदाई आवाज़ मौजूद है जिसके मुताबिक हर मुल्क के फ़र्द और क़ौम की रहबरी होती रहती है और उसका असर उन पर पडता है।

इमाम हुसैन अ० ने कामिल इंसानियत के नमूने को दुनिया में पेश करने में कामिल तरीन हिस्सा लिया है। सबसे बालातर उनकी इस्लाही कोशीश है और वह जुर्अत है जिससे उन्होंने इस काम का पूरा करने में मसायब का मुक़ाबला किया। वो समझते थे के रूहानी दुरूस्ती व सिदाक़त को बाला तर रखने में जो कुर्बानी झेली जाती है उसकी अज़मत से इंसानी ज़िन्दगी की कीमत और बढ़ जाती है। इस बात में खास माअनी है कि अगरचे खुदा के ये सिपाही अपने मक़ासिद के हुसूल के वास्ते माददी दुनिया में जंग करते हैं लेकिन चूंकि एखलाखी व रूहानी दुनिया माददी दुनिया की असास या बुनियाद है और एखलाखी व रूहानी दुनिया माददी दुनिया की रहबरी कर सकती है। इस लिये इन अज़ीमुशान इंसानो की शिकस्त भी कुछ दिनों के बाद माददी दुनिया में फ़तह की शकल में तब्दील हो जाती है।

इमाम हुसैन अ० हमें हक़ व सदाक़त के लिये जंग करना सिखाते हैं और यह भी सिखाते हैं कि इंसानो को खुदगरज़ी और जात-पात की वजह से नहीं बल्कि मज़लूमों के हुक्क़ कि हिफ़ाज़त के लिये लडना चाहिये जो बेइंसाफ़ी का शिकार हैं।

इमाम हुसैन अ० की सीरत से हमको यह दर्स भी हासिल होता है कि हमें सदाक़त की हिमायत के वास्ते जंग करना चाहिये, ख़्वाह ऐसा करने से हमको शिकस्त ही क्यों न हो, हमको कुर्बानी ही क्यों न देनी पडी।

(इंसाने कामिल)

## सर फ़्रेडरिक जे-गोल्ड

(मशहूर युरोपी मुसन्निफ़)

लोग नये निज़ाम का ज़िक्र करते हैं लेकिन सिर्फ़ वही निज़ाम बाक़ी रहने के काबिल है जिसकी बुनियाद रूहानियत पर हो। उन उसूलों पर जिनकी तालीम ख़ुद इमाम हुसैन अ० ने दी थी। यानी इन्फ़ेरादी, जमाअती, क़ौमी और बैनुलअक़वामी ज़िन्दगी में रवादारी, आज़ादी तहफ़्फ़ुज़ और इंसाफ़ की तालीम। इस किस्म के नये निज़ाम में सल्तनत के ग़ल्बे और ज़बरो जुल्म का इमकान नहीं रहेगा बल्कि एक मुश्तरक ज़िन्दगी होगी जो एक इंसानी और क़ौमी उख़ुवत कायम करेगी। दर हकीक़त इमाम हुसैन अ० एक इंसानी फ़हम व ज़कावत का आला नमूना हैं जो तनफ़्फ़ुर, जंग और जुल्म की तारीक़ दीवारों में से होती हुई रेगिस्तानों और समुन्दरों को अबूर करती हुयी अम्न व अमान का पैग़ाम देती हैं। इमाम हुसैन अ० की ज़िन्दगी हमारे लिये एक मुफ़ीद और नसीहत आमेज़ सबक़ है। पैग़म्बरे



इस्लाम स0 का नवासा और हज़रत अली अ0 का फ़रज़न्द जिन्होंने कुस्तुनतुनियां में बहैसियत एक बहादुर सिपाही के काम सर अंजाम दिया था और बहैसियत एक आदिल हाकिम के हुकूमत की थी। इमाम हुसैन अ0 ने अपने अमल में दिखा दिया कि किस तरह नौजवानों को अपने आबाओ अजदाद के कारनामों का एहतेराम और उनके औसाफ़े हमीदा और जज़्बा-ए-ख़िदमते खल्क को जारी रखना चाहिये। (हुसैन दी मार्टर)

## सर जार्ज टामस

कौन है जो इमाम हुसैन अ0 की हक़ व सदाक़त को बलन्द करने वाली इस लडाई की तारीफ़ किये बग़ैर रह सकेगा। दूसरो को लिये जीने का उसूल, कमज़ोरो और दुखयारों की इमदाद को अपना मक़सदे हयात बनाने की बेनज़ीर मिसाल इमाम हुसैन अ0 की बेलौस शख़्सियत से ज़्यादा रौशन और कहीं नहीं मिल सकती। जिन्होंने अपनी और अपने महबूब तरीन अज़ीज़ो और साथियों की जान की बाज़ी लगा दी लेकिन एक ज़ालिम और ताक़तवर बादशाह के सामने सर झुकाने से इन्कार कर दिया।

हुसैन अ० ने आज से तेरह सौ साल पहले अपनी जान दी थी, लेकिन उनकी लाफ़ानी रूह आज भी दुनिया में मौजूद है और उनकी शहादत की पाकीज़ा याद हर सान मोहर्रम में ताज़ा कि जाती है। (हुसैन डे रिपोर्ट)

## डा० क्रिसटोफ़र डी विक्टर

(मिशन अस्पताल बम्बई)

मैंने हज़रत इमाम हुसैन अ० की ज़िन्दगी और उनके कारनामों का मुतालेआ बहुत गहरी नज़र से किया है। मैंने उनमें खुदावन्दे यस्मूसीह की सी मोहब्बत पायी है।

अगर हज़रत मसीह को सलीब पर चढ़ाया गया तो हज़रत इमाम हुसैन अ० का सर ज़ेबे नेज़ा किया गया। मसीह को हक़ व सदाक़त के लिये सूली पर लटकाया गया और हुसैन अ० ने भी हक़ और सच्चाई कि मुदाफ़ेअत के लिये अपनी और अपने बच्चों की जान कुर्बान की। इस लिये ईसाई फिरक़ा हुसैन अ० से जितनी भी मोहब्बत करे कम है। वो दुनिया में हक़ का बोलबाला करने के लिये पैदा हुए थे और उनके हाथ से हक़ का बोलबाला हो गया। अब जब भी किसी कि जुबान पर हक़ और शुजाअत, ये दोनो नाम आयेंगे तो ना मुमकिन है कि हुसैन अ० का नाम न आये। हुसैन अ० की कुर्बानी की अज़मत का यह एक ज़िन्दा सबूत है।

काश दुनिया इमाम हुसैन अ० के पैगाम, उनकी तालीम और मक़सद को समझे और उनके नक़शे क़दम पर चल कर अपनी इस्लाह करे। (बम्बई क्रानिकल)

### डा- एच-डब्लू-बी-मोरनीऊ

इमाम हुसैन अ० उसूने सदाक़त के सख़्ती से पाबंद रहे और और अपनी ज़िन्दगी के आखिरी लम्हात तक मुस्तिक्ल मिजाज़ और ग़ैर मुताज़लज़िल रहे।

उन्होंने ज़िल्लत पर मौत को तरजीह दी। ऐसी रूहे कभी फ़ना नहीं होती और इमाम हुसैन अ० आज भी रहनुमायाने इंसानियत की फ़ेहरिस्त में बुलन्द मक़ाम के मालिक है। वो तमाम मुसलमानों के लिये रूहानी पैगामे अमल पहुँचाने वाले है। और दूसरे मज़हब के पीरों के वास्ते नमुन-ए-कामिल हैं। वो निडर थे और खुदा परस्ती की मंज़िल में कोई ताक़त उनको ख़ौफ़ नहीं दिला सकती थी। वो अपने नस्बुल ऐन के हासिल करने में सच्चाई के साथ कोशं रहे। (हुसैन दी मार्टर)

### लार्ड हेडले

(लन्दन)

हज़रत इमामे हुसैन अ० ने मैदाने करबला में अनथक जद्दो जहद के साथ लोगों को अहकामे रसूल स० अ० की तरफ़ मुतावज्जेह किया और यह बताया कि हक़ पर साबित क़दम रहने की सई इन्सान का फ़र्ज अक्वलीन है। अगर हुसैन अ० में सच्चा जज़्बा कारफ़रमा न होता तो अपनी ज़िन्दगी के आखरी लम्हात में उनसे रहमों करम, सब्रो इस्तेक़लाल और हिम्मत व जवां मरदी हरगिज़ अमल में आ ही नहीं सकती थी जो आज सफ़ह-ए-हस्ती पर सब्त है। अगर वो दुनियादार इन्सान होते तो बिला शुब्हा दुश्मन के सामने सरे तसलीम ख़म कर देते। मगर जज़्बे इलाही वा तालीमाते मोहम्मदी का असर ये था कि वो मए तमाम रोफ़का के मौत के घाट उतर गये। लेकिन फिस्को फिज़ूर और गैर इस्लामी उसूल की हिमायत न करना थी न की जब इन्सान उनके कारनामों और शहादत का हाल तारीख़ में पढ़ता है तो उसे हुसैन अ० की अज़मत और उनकी सीरत का अन्दाज़ा होता है।

मालूम होता है कि हुसैन अ० ने अपने रोफ़का में भी वही अपना वाला जज़्बा पैदा कर दिया था कि इसका कहीं भी पता नहीं मिलता कि उनके असहाबे ख़ास में से किसी एक ने भी मसायब में उनका साथ छोडा हो।

ये एक दास्ताने ग़म है जिसका ख़ात्मा रूह फ़रसा है। इससे मालूम होता है कि किस तरह एक बलन्द सूूरत का हामिल, एक बलन्दो अज़ीम मक़सद के लिये

अपनी जान की परवाह नहीं करता, अपने नफ़स को कुर्बान कर देता है मगर उसूल की कुर्बानी किसी तौर गवारा नहीं करता। (हुसैन अ० दी मार्टर)

## मिस्टर जे-आर-राबिन्सन

मेरी ज़िन्दगी का बेशतर हिस्सा तारिख के मुताअले में गुज़रा है मगर जो कशीश और मज़लूमियत मुझे तारीखे इस्लाम के इस बाब में नज़र आई जो हुसैन अ० और करबला से मुताल्लिख है वह कहीं नहीं देखी। मुसलमानो के पाक नबी स० के विसाल के बाद उनके नवासे ने जो अज़ीमुश्शान कारनामा अन्जाम दिया वह इस्लामी तालीम की सदाक़त और हुसैन अ० की अज़मत की बहुत बड़ी दलील है। इमाम हुसैन अ० ने सैकड़ो मुश्किलात के बावजूद अपने उसूलों और इस्लामी निज़ामें हुकूमत कि हिफ़ाज़त की। एक जाबिर ताक़त के सामने सफ़आरा होने की ज़र्रा बराबर झिझक महसूस नहीं की। बड़ी बहादरी, उलुल अज़मी और खन्दा पेशानी के साथ मसायब का मुक़ाबला किया और अपने जानिसारो के साथ शहीद हो गये।

बिला शुब्हा तारीखे आलम में ऐसी मिसालें कामयाब हैं बल्कि नायाब हैं और जब हम इस वाक़ेए को इस नुक़तए निगाह से देखते हैं तो हुसैन अ० की अज़मत और भी बढ़ जाती है। कि उन्होंने जितनी तकलीफ़े उठाई और जिस शदीद मुसीबत

के आलम में शहीद हुए इसमें उनका ज़ाती मफ़ाद न था। उन्होंने जो कुछ किया खुदा के लिये किया। तस्लीम करना पड़ता है कि उनसे पहले और उनके बाद अब तक शहीदों में कोई उनके हम पल्ला नहीं गुज़रा। (इत्तेहाद लाहौर)

### मिस्टर डब्लू-सी-टेलर

ज़ालिमो ! बताओ ख़ौफ़नांक क़यामत के दिन तुम क्या जवाब दोगे जब मोहम्मद स० अ० तुम से सवाल करेंगे। कहाँ है वह साहेबाने कराबत जिनकी मवददत मैंने तुम पर फ़र्ज़ की थी ? जिनमें कि हर फ़र्द की जान मुझे हज़ारों जानों से ज़्यादा अज़ीज़ थी।(यही न) कि बाज़ को भारी भारी जंजीरों में जकड़ कर तारीक कैदखानों में असीर किया और कुछ करबला के बे आबो गयाह सहारा में ज़ख़्मों से चूर खाक में लिथड़े पड़े है।

जब तख़्ते अदालत के रू-ब-रू तुम्हारा रसूल स० अ० से सामना होगा तो वो तुमसे इस्तेफ़सार करेंगे। क्या उस शख़्स के ऐहसानात का तरीका-ए-इज़हारे शुक्रगुज़ारी यही है ? जिसका चश्माये फ़ैज़ तुम्हारे लिये निहायत आज़ादी से जारी रहा। (मुस्लिम रिविक्व)

## जस्टिस आरनाल्ड

(बम्बई हाईकोर्ट)

रसूले इस्लाम स० अ० की नस्ल में महज़ तन्हा एक इमाम हुसैन अ० ही रह गये थे जो अली अ० और फ़ातेमा स० के छोटे बेटे थे, उनमें बाप की शुजाअत और बहादुरी कूट कूट कर भरी थी, वह बेहद बहादुर और शरीफ़ ख़्याल इंसान थे। इमाम हुसैन अ० कूफ़ियों के बार बार तलब करने पर (जिन्होंने इताअत के वादे किये थे) आप एक मुख्तसर जमाअत के साथ रवाना हुए। इस जमात में उनकी बीवी, उनके बेटे, उनकी बहने और रोफ़ाका में चन्द सवार थे। आप जब अरब के रेगिस्तानों को तय कर गये तो फ़रात के किनारे जो कूफ़े से चंदां दूरी नहीं है दुश्मनों के नरगे में घिर गये।

हज़रत अली अ० और हज़रत फ़ातेमा स० अ० का शरीफ़ ख़्याल फ़रज़न्द रसूले खुदा का प्यारा नवासा शुजाअत और बहादुरी के जौहर दिखाकर नामरदों के दूर के हमलों से ज़ख़मी होकर शहीद हो गये। दुश्मन उनके नज़दीक जाने जुअ्त नहीं करते थे कि मुबादा इस शेर के पंजे में गिरफ़्तार होकर मौत के सिपुर्द कर दिये जायें।

इमाम हुसैन अ0 का सर तन से जुदा कर लिया गया और कूफे में कूचा-ब-कूचा फिराया गया और मुशतहर किया गया। इस जां गुस्ल वाक़ेये ने मेरे दिल को इंतेहा दर्जा तहो बाला कर डाला है। (हुसैनी दुनिया)

## डाक्टर एडवर्ड सील

(मुसन्निफ़-खिलाफ़ते बनी उमय्या व बनी अब्बास)

इस मुख्तसर जमाअत का हर फ़र्द यके बाद दीगरे मैदाने कारज़ार में शहीद कर दिया गया। यहा तक कि सिर्फ़ हुसैन अ0 और आपका ख़ुर्द साल फ़रज़न्द जो बहुत कमसिन था बक़ैदे हयात थे। ये बच्चा कौन था? वही मज़लूम करबला का शशमाहा बच्चा अली असगर था। जिसकी माँ का दूध ख़ुश्क हो चुका था। सख्त गरमी में उस पर पानी बन्द था। करबला का रेगिस्तान लू उगल रहा था। बेज़बान मासूम की ज़बान मारे तशनगी के ख़ुश्क थी और नन्हा सा कलेजा कबाब हो रहा था। इधर नरगा-ए-आदा में घिरे हुए बाप ने इस आलमें बेकसी में "है कोई जो मेरी मदद करे" कि आवाज़ बुलन्द की। उधर शशमाहे बच्चे ने अपने आप को झूले से गिरा दिया। हाँ! ज़रा देखना भेडियों की टिडडी दिल फ़ौज में बेचैनी पैदा हो गयी,



पत्थरों के दिल पसीज गये, ज़ालिम जल्लादों के जिस्मों में रहम व करम की लहरें पैदा हो गयीं और सब ने एक ज़बान होकर कहा, इसे क्यों न पानी दिया जाये।

इधर मज़लूम ने कहा कि अगर तुमको ये ख्याल पैदा होता है कि इस बहाने से मैं खुद पानी माँग रहा हूँ तो देख लो मैं इसे यहाँ छोड़ कर हट जाता हूँ तुम खुद आकर इसे पानी पिला दो।

शिम्र मलऊन को फ़ौज की तब्दीलिए मिजाज़ का इल्म हो गया। उसने हुरमुला को हुक्म दिया कि कलामें हुसैन को क़ता कर दे। हुक्म सुनने की देर थी हुरमुला ने तीन भाल का तीर ऐसा रिहा किया कि मासूम की हल्के नाज़ुक को चीर कर बाज़ुए हुसैन अ० में दर आया और बच्चा बाप के हाथों पर मुंक्लिब हो गया।  
(हुसैनी पैग़ाम)

## **जर्मन डाक्टर मीऊर मांबैन**

(मुसन्निफ़ सियासते इस्लामिया)

इमाम हुसैन अ० अपने ज़माने की सियासत में आला दर्जा रखते थे बल्कि यह भी कहा जा सकता है कि अरबाबे दयानत में से किसी शख्स ने ऐसी मोअस्सर सियासत इख्तियार नहीं की। आप में सिफ़ते सखावत और दीगर महबूब तरीन

सिफ़ात थी। उनका मक़सद सल्तनत और सियासत हासिल करना न था। साफ़-साफ़ अपने साथियों से फ़रमाते जाते थे कि जो जाह व जलाल कि हिर्स व तमा में मेरे साथ जाना चाहता है हो वो मुझसे अलग हो जाये।

आपने बेकसी और मज़लूमियत को इख़तेयार फ़रमाया। इमाम हुसैन अ० ने अपनी ज़िन्दगी के आख़री वक़्त में अपने तिफ़ले शीरख़ार के बाब में वो काम किया कि ज़माने के फ़िलास्फ़रों को मुताहय्यर कर दिया।

इमाम हुसैन अ० के वाक़ेए पर बरतरी हासिल कर ली। इमाम हुसैन अ० का वाक़ेआ आलेमाना, हकीमाना और सियासी हैसियत का था। जिसकी नज़ीर दुनिया ती तारीख़ में नहीं मिल सकती. (हुसैनी दुनिया)

## मिस्टर औसीवर्न

(इस्लाम एंड दी अरब्ज़)

सन् 60 हिजरी में बदबख़्त मोआविया मर गया और उसका लडका यज़ीद तख़्त नशीन हुआ। अपनी तख़्त नशीनी से क़ब्ल ही यज़ीद ने मोमनीन को बदनाम कर रखा था। वो एलानिया शराब नोशी करता था। शिकारी कुत्तों, बाज़ और दीगर नजीस जानवरों का बेहद शायख़ था। इस रिंद मशरब और ज़ालिम की तख़्त नशीनी में बहुत सी ऐसी रस्में जारी हो गयीं जो कूफ़े के अरबाबे दयानत के लिये न क़ाबिले

बर्दाश्त थीं। अहले दमिश्क अपने इस पेशवा के इत्तेबाअ में सडको पर एलानिया शराब पीते थे और मिस्ल उसके सभी अपने वक्त को महबूबाने शीरीं अदा की मोहब्बत में सर्फ करते थे।

क्या ये मज़हब की सरीह तौहीन न थी? ये सल्तनत और खलीफ़ाए वक्त से तसादुम का मौका न था? इमाम हुसैन अ0 की पाक रूह को ज़रूर सदाक़त के जज़्बात से मुतास्सिर होना चाहिये था जबकि आपने देखा के जुल्म के एक खौफ़नाक देवता ने गुस्ताखी के साथ मज़हबी जामे को ज़ेबे तन किया है। (हुसैनी पैग़ाम)

## फ़ादर पलामिश एस-जे

(पी-एच-डी डी-सी बम्बई)

बुलन्द मरतबा इन्सानों के बुलन्द मरतबा कारनामें हमें अरफ़ा व आला ज़िन्दगी बसर करने कि तलक़ीन करते हैं कि किसी बुजुर्ग की याद मनाना खुद हमारे लिये सूद मंद है। वो मिसालें जो शोहदा ने अपनी हयात में अपना सब कुछ कुर्बान करके पेश फ़रमार्यीं हैं हमारे लिये ऐसा नमूना है जिनको पेशेनज़र रख कर हम दुनियां में क़ौमो को बेहतर और काबिले फ़ख़्र ज़िन्दगी गुज़ारने की तलख़ीन कर सकते हैं।

इमाम हुसैन अ० की कुर्बानी यकीनन तारीख का एक अजीमुश्शान वाक़ेआ है जिसने सदाक़त को किज़्ब पर फ़तह हासिल करने में मदद पहुँचायी। (हुसैनी पैग़ाम)

## कैप्टन एल-एच-नेबलेट जे-पी

(डिप्टी कलेक्टर)

हुसैन अ० ने जामे शहादत पीकर इस्लाम को सफ़हा-ए-हस्ती से महो होने से बचा लिया। मोहर्रम की अहमियत समझने के लिये वाक़ेआते मा सबक़ पर नज़र डालनी ज़रूरी है।

सदियां गुज़र गई के सरदार कुफ़्फ़ार के पोते यज़ीद पलीद ने इमाम हुसैन अ० से तलबे बैअत की। आपने इन्कार किया और फ़रमाया कि मैं खुदाए बुजुर्ग व बरतर के सिवा किसी के सामने सर नहीं झुका सकता। इस दौरान मैं यज़ीद की ज़्यादतियों से आजिज़ आकर अहले कूफ़ा ने इमाम हुसैन अ० को बुलावा भेजा कि वहाँ आकर उसके मज़ालिम से गुलू ख़लासी करें। आपने मन्ज़ूर फ़रमाया और मय अन्सार व रोफ़ाक़ा के रवाना हो गये।

जब आप करबला के मैदान में पहुँचे तो एक फ़ौजे कसीर ने आपको बढ़ने से रोका। इस फ़ौज का सरदार हर था और फ़ौज में तेतिस हज़ार आदमी थे। यकुम

से हफ़्तुम मोहर्रम तक आप बराबर अफवाजे आदा को समझाते रहे जुल्म व सितम और नाहक कुशतो खून से बाज़ आये लेकिन उन्होंने एक ना सुनी। उन पर आपके दलाएल का असर नहीं हुआ। जब आप हर तरह से ऐहतमामे हुज्जत फ़रमा चुके और आपको यक़ीने कामिल हो गया कि लडाई होना लाज़मी है और एक फ़ौजे कसीर के मुक़ाबले में आपको फ़तह नहीं हो सकती और आप मय अन्सार व अइज़्ज़ा के शहीद हो जायेंगे। खुसूसन इस वजह से के यज़ीद का हुक्म जारी हो चुका था कि सरे हुसैन अ0 उसके सामने हाज़िर किया जाये आपने चौदह घण्टे की मोहलत माँगी जोकि मिल गई।

शबे आशूर आपने तमाम अन्सार व रोफ़का का जमा किया और एक पुरदर्द लहजे में एक तुलानी तक़रीर फ़रमाई जिसमें बाद अज़ पन्दो नासाएह आपने फ़रमाया कि कल सख़्त से सख़्त मुसीबत का सामना है। मैं तुम सब को मुतानब्बे कर देता हूँ। बाद ख़त्में तक़रीर आपने वह काम किया जिसकी मिसाल सफ़हा-ए-आलम में मिलना नामुमकिन है। और जिससे ज़ाहिर होता है कि आपको इन्सानी कमज़ोरी का किस क़द्र एहसास था और किस दर्जा आप सखी और रफ़ीक़-उल-क़ल्ब थे। ज़बाए ईसार आप में किस हद तक मौजूद था। आप ने फ़रमाया के खेमों के तमाम चिराग़ गुल कर दिये जायें और जिसका जहाँ भी चाहे वह उस दरवाज़े से चला जाये। मैंने अपनी बैअत तुम से उठा ली है। दूसरे दिन जब

सफ़ेदी-ए-सहर आसमान पर हवैदा हुआ तो सब के सब 72 जाँनिसार जामे शहादत पीने पर कमर बस्ता नज़र आये।

आपकी खलील फ़ौज का ज़िक्र ही क्या। एक एक करके आपके तमाम अन्सार मैदाने जंग में काम आये। तमाज़ते आफ़ताब तेज़ तर हो रही थी, प्यास का ग़ल्बा ज़्यादा हो रहा था। लेकिन खेमों में पानी का एक क़तरा भी मय्यसर न था। आपके शीर ख़वार बच्चे ने सूखी ज़बान दिखाकर तलबे आब की। उसको हाथों पर लिये हुए आप मैदाने जंग में आए और अशक्रिया से पानी तलब किया मगर जवाब में एक तीर हल्के असगर को छेदता हुआ गुज़र गया और वह बच्चा तडप कर इमाम के हाथों में राही मुल्के बका हुआ। आप क़ल्बे लशकर में आये बहुत से अशक्रिया को फ़ना-फिन-नार किया। सैकड़ों लाशे मैदान में पड़े हुए और सैकड़ों ज़ख़मी मैदान में एडियाँ रगड़ रहे थे, इमामे मज़लूम ज़ख़मों से चूर-चूर थे। आख़िर कार नरगा-ए-आदा में घिर गये। ज़ख़मों की कसरत से घोड़े पर से गिरकर फ़रशे ज़मीन पर आ गये और जामे शहादत नोश फ़रमाया।

आपकी शहादत के बाद आपके हरम कैद कर लिये गये। खेमों में आग लगा दी गई और तरह-तरह की मुसीबतें उठाना पड़ी। उस शहादते उज़मा की याद हर साल माहे मोहर्रम मे मनाई जाती है। (सरफ़राज़ लखनऊ)

## मिस्टर जे-ऐ-सिम्सन

(स्पेशल मजिस्ट्रेट आगरा आनरेरी सिक्रेट्री इंडियन क्रिश्चियन एसोसिएशन)

आज तेरह सौ साल बाद भी हम कुर्बानि-ए-इमाम हुसैन अ0 को उतना ही मोअस्सिर पाते हैं जितना कि किसी ज़बरदस्त जंग के खात्मे पर मैदाने कारज़ार में खूने शोहदा की सुर्खी इन्सानी दिलों को लरज़ा देती है।

तारिखे इस्लाम की यह जंग तमाम जंगो पर फ़ौकियत रखती है। जंगे नैनवा बज़ाहिर आले रसूल स0 की शहादत पर खत्म हुई। इन्सानी खून के कीमती जौहर पानी से ज़्यादा अरज़ाँ हुए। सगीर व कबीर, तिफ़ले शीरखवार और परदा नशीन मस्तूरात तीन यौम तक भूख, प्यास और सहरीई तकलीफ़ का शिकार रहीं। बेरहमी, दरंदगी और सफ़फ़ाकी की तमाम हर्दे, जुल्म व सितम की तमाम रस्में मैदाने करबला में तमाम हुई। इमामे आली मक़ाम सब्रे अय्यूब को भी शर्मसार कर देने वाले सब्र के साथ सीना सिपर होकर उन तमाम मज़ालिम का मुक़ाबला करते रहे। लेकिन जब बातिल सर चढ़ने लगा, इन्सानियत की जगह दरिन्दगी ने ले ली और इस्लाम के हरे भरे बाग़ में फ़िस्को फ़िज़ूर की आंधियां चलने लगीं तो हुसैन अ0 ने महसूस किया की अब इस बाग़ को सींचने की ज़रूरत है। दीने मुस्तफ़वी की तकमील एक ज़बरदस्त कुर्बानी की मोहताज है। जुअत व बहादुरी, सब्र व रज़ा इस्तेक़लाल और हिम्मते मर्दाना लेकर हुसैन अ0 मैदाने कारज़ार में आये अपनी मुट्ठी भर फ़ौज के साथ हज़ारो की फ़ौज के सामने डट गये और इन्सानो के रूप

में छिपे हुए दरिन्दों को बता दिया कि हक़ और इन्साफ़ को कभी शिकस्त नहीं होती, मर्द ज़िल्लत की ज़िन्दगी पर मौत को तरजीह देता है और आज़ादी को जान से प्यारा रखता है और सबसे बहादुर वह है जो खुद हँसता हुआ मरकर अपनी क़ौम और जमाअत को तबाही से बचा ले जो हक़ परस्ती की राह में अपने खून की कीमत न समझे, अपने ज़मीर और अपनी आज़ादी को दुनियां की किसी भी कीमत पर न बेचे।

वाक़ेए करबला आज भी दुनिया के हर इन्सान को बिला लेहाज़ क़ौमो मिल्लत यह दर्स देता है कि ज़िल्लत की ज़िन्दगी से इज़ज़त की मौत बेहतर है। जो हक़ व सदाक़त में कुर्बान हुआ वो ज़िन्दा-ए-जावेद हो गया। बक़ा सिर्फ़ सच्चाई को हासिल है।

हुसैन अ० की कुर्बानी क़ौमो की बक़ा और जेहादे आज़ादी के लिये एक मिशअल है जो अबदुलआबाद तक रौशन रहेगी। हुसैन अ० की शहादत शिकस्त नहीं बल्कि इस्लाम की न मिटने वाली फ़तह है। इस्लाम इस गेरां क़द्र कुर्बानी पर फ़ख़्र करता रहेगा। खुशबख़्त है वो क़ौम जिस में इमाम हुसैन अ० जैसा जांबाज़ मुजाहिद पैदा हुआ।

कर दिया खून शहादत से ज़मी को लाल रंग

यूँ ही मिलती आयी हैं इस्लाम को आज़ादीयाँ

(हुसैनी पैग़ाम)



## स्वामी कलजुगा नन्द मुसाफ़िर

हज़रत इमाम हुसैन अ० की तरफ़ दुनिया के इस जज़्बे व कशिश का सबब क्या है? बात यह है कि कशिश दो चीज़ों से पैदा होती है। एक हुस्न दूसरा एहसान। हज़रत इमाम हुसैन अ० में यह दोनो चीज़े पायी जाती हैं। हुस्न से मुराद यहाँ हुस्ने अखलाख है जो हुस्ने सूरत से ज़्यादा जाज़िब है आपके अखलाख का यह आलम था कि दुश्मनों को भी आप में कोई बुराई दिखाई नहीं देती।

आपका एहसान! उसका क्या पूछना। हज़रत इमाम हुसैन अ० ग़रीब न थे मगर उनका पैसा ग़रीबों पर सर्फ़ होता था। वह खुद फ़ाका करते थे। रानियाँ घर में चक्की पीसती थीं और बच्चे भूखे सोते थे मगर पब्लिक के मफ़ाद का पैसा वो अपने ज़ाती मफ़रद में नहीं लाते थे। उन्होंने मैदाने करबला में चार सबक़ दिये।

(1) ऐ लोगो! तुम सब भाई भाई हो!

(2) ऊँच नीच की कोई तफ़रीक़ नहीं, इन तफ़रीकों को मिटा दो।

(3) सच्चाई के रास्ते पर मरते दम तक कायम रहो।

(4) ज़ालिम के जुल्म का मुक़ाबला करो यहाँ तक कि उसके तख़्त को उलट दो।

दुनिया अगर आपकी इन तालीमात पर अमल करे तो कोई वजह नहीं कि तमाम झगडे बखेडे ख़त्म न हो जायें।

तमाम मुसीबतें इस लिये हैं कि एक दूसरे को पस्त और हकीर समझा जाता है, छूत छात का ख्याल छाया हुआ है। (हुसैन अ० डे रिपोर्ट)

## गिबन

इमाम हुसैन अ० ने अपने असहाब पर ज़ोर दिया कि वो (मैदाने करबला से) फ़ौरन हटकर अपनी (जानों की) हिफ़ाज़त करें। लेकिन तमाम (आइज़ज़ा और असहाब) ने अपने प्यारे और जान से ज़्यादा अज़ीज़ इमाम को तन्हा छोड़ने से इन्कार कर दिया। इमाम हुसैन अ० को दुआ करके और जन्नत का यकीन दिलाकर उनकी हिम्मत अफ़जाई की। रोज़े आशूर की हौलनाक सुबह को इमाम हुसैन अ० घोड़े पर सवार हुए आपके एक हाथ में तलवार और दूसरे में कूराने मजीद था। आपके साथ शोहदा का बहादुर और सखी गिरोह सिर्फ़ बत्तीस सवार और चालिस प्यादों पर मुशतमिल था।

(डिकलाइन एण्ड फ़ाल आफ रोमन अम्पायर। सफ़हा 287)

यही मुसन्निफ़ एक दूसरे मुक़ाम पर लिखता है:

हज़रत इमाम हुसैन अ० का पुरदर्द वाक़ेआ एक दूर दराज़ मुल्क में रूनुमां हुआ, यह वाक़ेआ और संगदिल अफ़राद को भी मुत्तासिर कर देता है। अगरचे कोई कितना ही बेरहम हो मगर इमाम हुसैन अ० का नाम सुनते ही उसके दिल में एक जोश और हमदर्दी पैदा हो जायेगी।

## शिल्डर

(एक मशहूर मगरिबी मुफक्किर)

इमाम हुसैन अ० अपनी छोटी सी जमात के साथ रवाना हुए। आपका मक़सद शानों शौक़त और ताक़त व दौलत हासिल करना न था। आप एक बुलन्द और अज़ीमुशान कुर्बानी पेश कि दुश्मनों से मुक़ाबला करना ( दुश्मन की तादात की कसरत की वजह से) बहुत दुशवार है और यह कि वह सिर्फ़ उनसे ही लडने ही के लिये नहीं बल्कि उनको शहीद करने के लिये जमा हुए है। बावजूद ये कि (हुसैन अ० और हुसैन अ० के) बच्चो पर पानी बन्द कर दिया गया। लेकिन वह दहक़ते हुए आफ़ताब के नीचे, तपते हुए रेगिस्तान पर अज़म व इस्तेक़लाल का पहाड बने हुए कायम रहे। उनमें से कोई एक लम्हे के लिये भी न घबराया बल्कि निहायत बहादुरी से सख़्त और शदीद मुसीबतों का बग़ैर हिचकिचाहट के मुक़ाबला करता रहा।

## डा० क्रिस्टोफ़र

काश दुनिया इमाम हुसैन अ० के पैग़ाम, उनकी तालीम और मक़सद को समझे और उनके नक़शे क़दम पर चलकर अपनी इस्लाह करे।

## के-सी-जान

(अमेरीकी इतिहासकार)

इमाम हुसैन अ० को कुदरत ने इतना बेपनाह सब्र अता कर दिया था कि उनके इस्तेक़लाल की मिसाल किसी दूसरे इन्सान में नहीं मिल सकती। आपका अज़म व इरादा पहाड़ की तरह मज़बूत था और आप जो कुछ कहते थे वह करके दिखाते थे और जो कुछ करते थे उसे पाए तकमील तक पहुँचाते थे। आपकी पामरदी बहादुरी रहती दुनिया तक तारीख़ में सुनहरे हरफ़ों से तहरीर होगी मगर आपकी तकालीफ़ व मुश्किलात मसाएब व आलाम खून से लिखे जायेंगे।

## के-एल-रलियाराम

(हिन्दुस्तानी ईसाई रहनुमा)

उस शख्स की ज़िन्दगी के बारे में, मैं क्या कहूँ जो रूए ज़मीन पर हक़ व सदाक़त का अलम बुलन्द करने वाला पहला फ़र्द है। इमाम हुसैन अ० की शहादत का वाक़ेआ किसी एक क़ौम से मुताल्लिक़ नहीं है। इमाम अ० अपनी बुलन्द सीरत का इज़हार फ़रमाकर आने वाली क़ौमों के सामने साबित व इस्तेक़लाल, सब्र व सुकून और हक़ पसन्दी का एक कामिल नमूना रख गये हैं ताकि आने वाले लोग उनकी कुर्बानी को सामने रख कर ज़ालिमों और जफ़ाकारों के सामने सरे तस्लीम ख़म न करें। करबला के मैदान में इमाम हुसैन अ० की सीरत के वो-वो जौहर खुले हैं जिन पर ग़ौर करके इन्सान अंगुशबंदों रह जाता है। इस चौहदवीं सदी में जबकि दुनिया इन्सानियत और सदाक़त से सैकड़ों कोस दूर हट गई है, आपकी बुलन्द सीरत क़ौमों के लिये मिसअले हिदायत का काम दे सकती है। इमाम अ० ने चूँकि हक़ व सदाक़त के एक आफ़ाक़ी उसूल के लिये जान दी इस लिये हर क़ौम व मज़हब के लोग आपकी मज़लूमियत और फ़िदाकारी पर आँसू बहाते हैं। दुनिया से सैकड़ों सल्तनतें मिट गयी, हज़ारों बड़े बड़े इन्सान पैवंदे ज़मीन हो गये कि आज कोई उनका नाम भी नहीं लेता। लेकिन इमाम हुसैन अ० ने अपनी कुर्बानी से तारीख़ पर ऐसा नक़श छोड़ा जो अपनी पाएदारी से ज़रीदाए आलम पर हमेशा के लिये सबत हो गया है। दुनिया बदल जायेगी, इल्म ज़ाहिर के आबो रंग में तग़य्युर आ जायेगा लेकिन ज़ालिम व मज़लूम बाक़ी रहेंगे और जहाँ भी हक़ व सदाक़त ज़ब्र और जुल्म के बरसरे पैकार होगी वहाँ हुसैन अ० और यज़ीद को याद

किया जायेगा। हर दौर में यज़ीद पैदा होते रहेंगे लेकिन इमाम हुसैन अ० जैसा सदाक़त पसन्द, बुलन्द सीरत इन्सान अब पैदा न होगा। इमाम हुसैन अ० के उसूल की हमागीरी एक ऐसा वाक़ेआ है जिस पर तमाम क्रौमो के इत्तेहाद की बुनियाद रखी जा सकती है।

(मुल्तान में एक जलसे के खेताब का ऐखतेबास)

### **डब्लू-डच-बरन**

(सद्र इंडियन इंस्टीट्यूट आफ़ आरकीटेक्टस)

उन लोगों के साथ शमूलियत मेरे लिये बाएसे फ़ख़्र व इंबेसात है जो इमाम हुसैन अ० डे की सूरत में दुनिया के अज़ीम तरीन हीरो और सदाक़त के अलमबरदार शहीद की तेरह सौ साला याद मना रहे हैं। दुनिया रफ़ता-रफ़ता उन अक़दार का इरफ़ान हासिल करेगी जो बेलौस कुर्बानी और सच्चाई के उसूलों को बुलन्द रखते हुए हज़रत इमाम हुसैन अ० के जान देने में मुज़मर है। वक़्त के साथ दुनिया वालों को इमाम हुसैन अ० की मारेफ़त का शऊर हासिल होता रहेगा और इन्सानियत की बक्रा के लिये उनकी कुर्बानी की अहमियत रोज़ बरोज़ बढ़ती चली जायेगी।

## रिवर एंड फ़ादर पेले

(प्रिंसपल ज़ेवियर कालेज बम्बई)

अज़ीम लोगों के अज़ीम कारनामों हम सब को अपनी ज़िन्दगी बेहतर से बेहतर और ज़्यादा बामक़सद तरीके से गुज़ारने पर माएल करते हैं। उन शहीदों की सीरत की मिसालें जिन्होंने सच्चाई के रास्ते में अपनी जानें कुर्बान कर दी इस लिये पेश की जाती हैं ताकि दुनिया के लोग बेहतर और बामक़सद ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीका सीख लें। हज़रत इमाम हुसैन अ० बिला शक व शुब्हा तारीखे आलम में अपनी कुर्बानी के ज़रीए वह मुक़ाम हासिल कर चुके हैं जहाँ उनके नक़शे क़दम पर चलने वाले बातिल के मुक़ाबले में हक़ की दायमी फतह की ज़मानत बन सकते हैं।

## जी-बी- एडवर्ड

तारीखे इस्लाम में एक बाकमाल हीरो का नाम आता है जिसको हुसैन अ० कहा जाता है। यह मोहम्मद स० अ० का नवासा, अली और फ़ातमां स० अ० का बेटा हुसैन अ० लातादाद सिफ़ात और औसाफ़ का मालिक है जिसके अज़ीम व आला

किरदार ने इस्लाम को ज़िन्दा किया और दीने खुदा में नई रूह डाली। हक़ तो यह है कि अगर इस्लाम का यह बहादुर मैदाने करबला में अपनी शुजाअत के जौहर न दिखाता और एक पलीद व लईन की हुक्मरान की इताअत क़बूल कर लेता तो आज मौहम्मद स० अ० के दीन का नक़शा कुछ और ही नज़र आता, न तो कुर्आन होता न ईमान, न रहम व इंसाफ़, न करम न वफ़ा बल्कि यूँ कहना चाहिये कि इन्सानियत का निशान तक ना दिखाई देता। हर जगह वहशत व बरबरीयत व दरिंदगी नज़र आती।

(इख़तेबास अज़ हिस्ट्री आफ़ इस्लाम)

## **एफ़-सी- बेन्जामिन**

(बरतानवी ईसाई मोअरिख़ व मुसन्निफ़)

इस्लाम के जांबाज़ हीरो और मोहम्मदे अरबी के महबूब तरीन नवासे इमाम हुसैन इब्ने अली अ० के नामे पाक में इतना तक़द्दुस है कि उनका इस्मे मुबारक सुन कर मुखालेफ़ीने इस्लाम के सर एक दफ़ा तो ज़रूर ख़म हो जाते हैं और ये शहीदे आज़म हुसैन अ० का एक ऐसा एजाज़ है जिससे किसी को इन्कार की मजाल नहीं।



## एस गिलबर्ट

पैगम्बरे अरबी हज़रत मौहम्मद स० अ० के लाडले नवासे और खलीफ़ा-ए-बरहक़ जनाबे अली अ० के साहबज़ादे हुसैन अ० को करबला के जंगल में जिस बेदर्दी से मारा गया, इनके अज़ीज़ों, इनके बेटों और इनके साथियों को जिस बेरहमी से जुल्म व जफ़ा की कुन्द छुरी से ज़िब्हा किया गया वो इस्लामी तारीख़ का इतना बड़ा स्याह दाग़ है जो क़यामत तक नहीं मिट सकता। किस क़द्र अफ़सोस का मक़ाम है वो हुसैन अ० जिसके नाज़ रसूल स० अ० ने उठाये और जिसको जन्नत की बादशाहत सौंपी गई, उसको काफ़िरों और मुशरिकों ने नहीं बल्कि कलमा गो मुसलमानों ने तहे तेग़ करके उसका सर नैज़े पर चढ़ाया। यज़ीदियों के जुल्मों सितम कि ऐसी मिसाल तारीख़े आलम में बहुत कम मिलेगी।

## प्रोफ़ेसर ब्राउन

(मुसन्निफ़ तारीख़े अदबियाते ईरान)

इमाम हुसैन अ० का क़त्ल, मदीने की ताराजी और मक्के का मुहासिरा, इन तीन तारीख़ी चीरा दस्तीयों में से पहली चीरादस्ती ऐसी थी जिसने तमाम दुनिया

को लरज़ा बरअंदाम कर दिया और कोई भी शख्स जिसके सीने में जज़्बात हैं उस दर्दनांक कहानी को सुन कर बेचैन हुए बग़ैर न रह सकेगा।

## प्रोफ़ेसर एन-व्हाईट

(जर्मन मोअरिख)

इमाम हुसैन अ0 की शहादत न मिटने वाला लाफ़ानी कमाल है और इतनी तारीफ़ के लायक़ है कि ख़ुदा के फ़रिश्ते भी उनकी सताइश नहीं कर सकते। ख़ुदा ने अपने कलाम में जा ब जा आपकी मदद की है।

(पावर आफ़ इस्लाम)

## परसी साटिक्स

(मुसन्निफ़ तारीख़-ए-परेशिया)

माहे मोहर्रम 61 हि0 की दसवीं को इमाम हुसैन अ0 की मुख़्तसर जमाअत मरते दम तक जंग करने पर आमादा रही। उनकी बहादुरी के मुक़ाबले पर कोई बहादुर नज़र में नहीं समाता।

## नतशे

(मशहूर जर्मन फलसफी)

तखलीख की मेराज ज़ोहद व तक़वे की बुजुर्गी में हैं पर शुजाअत तखलीख का ताज है। ज़ोहद, तक़वा और शुजाअत का संगम खाकी इन्सान के उरूज की इंतेहा है जिसका ज़वाल कभी नहीं आयेगा। उस कसौटी पर परखा जाये तो इमामे आली मक़ाम ने बा मक़सद और अज़ीमुश्शान कुर्बानी देकर ऐसी मिसाल पेश की जो दुनिया की क़ौमो के लिये हमेशा रहनुमा रहेगी।

## वाल्टर फ़िंन्ज

करबला वाले हुसैन अ0 के सिवा तारीख में ऐसी कोई भी हस्ती नज़र नहीं आती जिसने बनीनवे इन्सान पर ऐसे माफ़ौक़ल फितरत असारात छोडे हो। ज़गो में फ़तह हासिल करने का तरीका जो इमामे आली मक़ाम ने कायनात के मज़लूमों को सिखाया है कि खुदा पर कामिल यकीन रक्खो, हक़ की खातिर बातिल से टकराने के लिये सीसा पिलाई हुई दीवार बन जाओ तो फ़तह तुम्हारे साथ है। आने वाने दिन तुम्हारे इस अमल को ज़मीन से निकलने वाले कभी न ख़त्म होने वाले खज़ाने की मानिन्द देखते रहेंगे।

## प्रिंसपल सीन

वाक़ेआए करबला में इन्सानी तारीख़ पर नाक़ाबिले महो आसार छोडे हैं। इस्लाम में सेहत बख़्श इस्लाहात और पाकीज़ा तरीक़ए हयात इससे आये है और अइम्म-ए-अहलेबैत अ0 स0 ने सक़ाफ़ते इस्लामियां को बनाने में कुर्बानी दी है और इस के ज़रिये से मशरिफ़ व मगरिब की तहज़ीब पर ताक़तवर आसार डाले हैं।

## मारकोटस

(मशहूर युरोपी मुसन्निफ़)

वो इमाम बनकर आया। वह इसकी सवारी कर रहा था जो रिसालत ज़ेबे सर करके तशरीफ़ लाया और रिसालत यह कह रही है "मैं हुसैन से हूँ और हुसैन मुझसे है"। हुसैन जन्नत के सरदार हैं और जन्नत में सिर्फ़ वही शख्स दाखिल होगा जो हुसैन अ0 का आशिक़ और मुहिब होगा। बहरक़ैफ़ ईसाई होने के बावजूद हमें यह मानना पड़ेगा कि जिस इमामत से इश्क़ किये बग़ैर कोई मुसलमान जन्नत में दाखिल नहीं हो सकता वो अपने मरतबे की फ़ज़ीलत के बारे में कुछ ऐसे राज़ अपने अन्दर रखती है जिनको रिसालत ही ख़ूब समझ सकती है।

## डाक्टर मुरकुस

(मशहूर मुसन्निफ़ व मोअरिख)

मुसलमानों को इमाम हुसैन अ० और उनकी तालीमात की पूरी पैरवी करनी चाहिये और उनके मिशन को ज़िन्दा रखना चाहिये। हुसैन अ० की यादगार जिस कद्र ऐहतेमाम और कररो फ़र से मनाई जाये कम है। यह वह हुसैन अ० है जिसने दीने खुदा को अ-बदी ज़िन्दगी बख़शी। ये वह हुसैन अ० है जिसने हर मज़हब व मिल्लत पर अज़ीम एहसान किया। ये वह हुसैन अ० है जिसने इन्सानियत को हैवानियत में तब्दील होने से बचा लिया। इस लिये एहले इस्लाम का फ़र्ज़ है कि बिला इम्तियाज़ गरोह व फिरका हुसैन अ० के नाम को अबद तक ज़िन्दा रक्खें। और यह बात कभी न भूलें कि जो क़ौम अपने पेशवा और रहनुमा के नाम और काम को ज़िन्दा नहीं रखती वो एक दिन दुनिया से मिट जाती है।

## आर-जे-विल्सन

(मशहूर युरोपी दानिशवर)

मैं इस्लाम की अज़ीमतरीन शखसीयत हुसैन इब्ने अली अ0 का इसी तरह एहतेराम करता हूँ जिस तरह मसीह इब्ने मरियम का। हुसैन अ0 ने करबला के तपते हुए रेगज़ार में जिस शुजाअत व बसालत का इज़हार किया उसकी नज़ीर मशहीर शुजाआने आलम में तो दरकिनार अंबिया व मुरसलीन की पाकीज़ा ज़िन्दगियों में भी नहीं मिलती। मैदाने नैनवा में उन्होंने खुदादाद कूवत व बहादुरी का जो लोहा मनवाया है उसकी मिसाल दुनिया कभी न उससे पेशतर देखी और न कभी सुनी। इससे साफ़ मालूम होता है कि हुसैन अ0 में एक ऐसा जौहर था जो खुदा तआला के सिवा कोई किसी को अता नहीं कर सकता और आपके किरदार से साफ़ वाज़ेह होता है कि आपकी तखलीक उसी नूरे खुदा वन्दी से हुई थी जिस नूर से मोहम्मद स0 और अली अ0 को खल्क फ़रमाया गया था और इसलिये मोहम्मद रसूल अल्लाह स0 अ0 ने आपकी शान में फ़रमाया कि "हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ"।

### यान-बेची-हान

दुनिया के बेशुमार मशहूर पहलवानों, ताक़तवरों और बहादुरों की शुजाअत व जवांमर्दी के क्रिस्से अहले आलम की नोके ज़बान पर हैं। लेकिन सातवीं सदी में एहले अरब में एक ऐसा बहादुर हीरो भी गुज़रा है जिसके शुजाआना कारनामों ने

जरी से जरी और दिलावर से दिलावर इन्सानो को भी हैरत से उँगलियाँ चबाने पर मजबूर कर दिया। इस जुर्गत मन्द दिलावर का नामेनामी हुसैन इब्ने अली अ0 है। हकीकत यह है कि अरब के इस हीरो ने घर बार लुटा दिया, अपने बच्चे अजीज व अकारिब जिब्हा करवा डाले और अपना सर भी कट वा दिया लेकिन न तो शैतान की इताअत कुबूल की और न अपने दीन पर आँच आने दी।

## वान क्रोहा

दर हकीकत हुसैन अ0 के कूवते बाजू में खुदा की कूवत काम कर रही थीं इस लिये की वो खुदा का था और खुदा उसका था। उसने करबला में जान देकर अपने दीन ही की हिफाजत नहीं की बल्कि इन्सानियत की हिफाजत की, खुदा की बेइन्तेहा रहमतेँ नाज़िल हों उस शुजा इन्सान पर जिसने इन्सानियत के मरतबे को फ़र्श से उठा कर अर्श तक पहुँचा दिया और जुल्म व सितम को हमेशा के लिये खत्म कर दिया।

## एफ-सी-ओडोनिल

अगरचे यह कहा जाता है कि वो अपने मक़सद की हिफ़ाज़त के लिये खुदा-ए-ताअला के रास्ते में कुर्बान हो गये। यह ठीक है कि उन्होंने अल्लाह के दीन को बचाते हुए सर धड़ की बाज़ी लगा दी और ऐसी फ़िदाकारी दिखाई जिसका नमूना दुनिया की किसी तारीख में नहीं मिलता। अगर आप मज़हब और इन्सानियत को महफूज़ रखने और सरबुलन्द करने के लिये जान न देते तो आज न तो कहीं दीने हक़ का निशान नज़र आता न कहीं इन्सानियत का सुराग़ मिलता।

## कर्नल हैरीसन

क्या दुनिया में कोई ऐसी हस्ती भी गुज़री है जो हक़ व सदाक़त की हिमायत में अपने मुट्ठी भर साथियों को लेकर हज़ारों बातिल परस्तों के मुक़ाबले में निकल खड़ी हुयी हो और इसी ने अपने ने अपने दीन की नामूस बचाने के लिये हर चीज़ कुर्बान कर दी हो। यकीनन दुनिया ऐसी मिसाल पेश करने से आजिज़ व कासिर है। ये बुजुर्ग हस्ती हुसैन इब्ने अली अ0 की है जिसने अपना सब कुछ लुटा कर, अपने बच्चे कटवा कर और अपना सर देकर अपने नाना का और अपने दीन का नाम अर्श पर उछाला।



## कोशां फ़ोहू

ये अज़ीम तरीन इन्सान है "उसका किरदार मुहरयरूल उकूल है" उसकी सीरत लासानी है। वो नैनवा का शहीद है, वो करबला का मज़लूम है, उसकी दास्ताने मज़लूमियत सुनी नहीं जा सकती। वो भूका प्यासा मारा गया, उसने दुनिया वालों को दिखाया की तसलीम व रज़ा इसका नाम है, ईसार व कुर्बानी इसे कहते हैं। तमाम आलमे कौनो मकां का यह इमाम अपने अन्दर बेपनाह खुदाई कुव्वत रखता है। यही वजह है कि आज हुसैन इब्ने अली अ0 का नाम सारी दुनिया के लोग अदब व ऐहतेराम से लेते हैं और उसका इस्मेगिरामी सुन कर ताज़ीम से सर झुका देते हैं।

हिन्दु दरबारे हुसैनी में

## पंडित जवाहर लाल नेहरू

तारीख का एक सबक आमोज वाक्रेआ वो अजीम व जावेदानी असर है जो करबला के गम अंगेज सानिहे से दुनियाए इस्लाम पर मुत्तब हुआ। ताज्जुब खेज अम्र यह है कि उन तवील ईसाईयों में करोंडो नफूस पर ये अजीमुश्शान असर जारी रहा और लातादाद अफ़राद की हमदर्दियां हासिल करता रहा। लेकिन फिर भी यह यह अम्र ताज्जुब खेज नहीं है, इसलिये की किसी खास मक़सद के लिये कुर्बानी नवे इन्सान पर हमेशा असर अंदाज़ होती रही है।

कुर्बानी जिस कद्र पुरखुलूस और जिसका मक़सद जितना आला होगा उतना ही उसकी सदाए बाज़ग़शत ज़माने के गुंबद में गूँजती चली जाएगी और मर्दों औरतों की ज़िन्दगियों पर उसका असर होता रहेगा।

यह लाज़मी अम्र है कि एक ग़मअंगेज वाक्रेआ हमारे जज़्बाते ग़म को उभारे ताकि हम उस जज़्बाए ग़म मे एक जज़्बाए कामरानी भी नमुदार है। यानि इंतेहाई मुखालिफ़ माहौल में इन्सानी कूवते इरादी की फ़तह और यूँ शिकस्तो ग़म से फ़तह मन्दी और मसरत पैदा होती है। इसलिये यह बहुत अच्छा है कि हम इसे याद रक्खे और इससे हिदायत व सबक हासिल करते रहें। (सरफ़राज़ लखनऊ)

## महात्मा गांधी

(1) मैंने करबला की अलमनांक दास्तान उस वक़्त पढ़ी जबकि मैं नौजवान ही था। उसने मुझे दमबखुद और महसूर कर दिया। (पैग़ामे इस्लाम)

(2) मैं अहले हिन्द के सामने कोई नई बात पेश नहीं करता। मैंने करबला के हीरो की ज़िन्दगी का बखूबी मुतालेआ किया है और उससे मुझे यकीन हो गया है कि हिन्दोस्तान की अगर नजात हो सकती है तो हमको हुसैनी उसूलों पर अमल करना चाहिये। (हुसैनी दुनिया)

(3) बहैसियत शहीद के इमाम हुसैन अ० की मुक़द्दस कुर्बानी मेरे में सना व सिफ़त का लाजवाब जज़्बा पैदा करती है। क्योंकि उन्होंने तशनगी की अज़ीयत और मौत को अपने लिये और अपने बच्चों और तमाम खानदान के लिये गवारा कर लिया लेकिन ज़ालेमाना कुवतों के सामने सर नहीं झुकाया। मेरा अक़ीदा ये है कि इस्लाम की तरक्की उसके मानने वालों की तलवारों की रहीने मिन्नत नहीं है बल्कि उसके अपने औलियाए कराम की कुर्बानियों का नतीजा है। (रज़ाकार लाहौर)

## डा० राजेन्द्र प्रसाद

करबला का वाक़ेआ-ए-शहादत इन्सानी तारीख का वह वाक़ेआ है जिसे कभी फ़रामोश नहीं किया जा सकता और जो दुनिया के करोड़ों मर्दों और औरतों की

ज़िन्दगी पर असर डालता है और डालता रहेगा। हिन्दुस्तान में इस वाक़ेए की याद बड़ी संजीदगी से मनाई जाती है जिसमें न सिर्फ़ मुसलमान हिस्सा लेते हैं बल्कि ग़ैर मुस्लिम अफ़राद भी मिसावियाना दिलचस्पी का इज़हार करते हैं। उन शौहदा की ज़िन्दगियाँ ऐसे ज़माने में जब कि हम इस मुल्क में जंगे आज़ादी में मसरूफ़ हैं और क़ौम व वतन की ख़ातिर कुर्बानियाँ पेश करते हैं हमारे लिये मिनार-ए-रौशनी की हैसियत रखते हैं। (शिया लाहौर)

## सर राधा कृशनन

इमाम हुसैन अ0 ने अपनी कुर्बानियों और ईसार से दुनिया पर साबित कर दिया है कि दुनिया में हक़ व सदाक़त को ज़िन्दा और पाइन्दा रखने के लिये हथियारों और फ़ौजों की बजाये जानों की कुर्बानी पेश करके कामयाबी हासिल हो सकती है। उन्होंने दुनिया के सामने एक बेमिसाल नज़ीर पेश की है।

आज हम उस बहादुर फ़िदाई और इन्सानयत को ज़िन्दा रखने वाले अज़ीमुश्शान इन्सान की याद मनाते हुए अपने दिलों में फ़ख़्र व मुबाहात का जज़्बा महसूस करते हैं।

इमाम हुसैन अ0 ने हमें बता दिया कि हक़ व सदाक़त के लिये अपना सब कुछ कुर्बान किया जा सकता है। (पयामें इस्लाम)

## मिस्टर गोखले

(साबिक सदर इंडियन नेशनल कांग्रेस)

अगर इमाम हुसैन अ० की अपनी शहादत से इस्लाम के उसूल को अज़सरेनों जिन्दा न करते तो इस्लाम मिट जाता और अगर इस्लाम का वजूद होता भी तो बे उसूल मज़हब की हैसियत से, जिसके अन्दर बड़ी आसानी से वो बुराईयां फैल जातीं जिनका रिवाज यज़ीद और उस ज़माने के मुसलमानों की रोज़ मर्ग की जिन्दगी में हो गया था। (हुसैनी दुनिया)

## पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त

(साबिक वज़ीरे दाखेला हिन्दुस्तान)

इमाम हुसैन अ० की ज़ात इस जुल्मत और तारीकी में एक मनाराए नूर की हैसियत रखती है। उनकी शहादत इन्सानियत को दरसे बसीरत देती रहेगी और उसको वहशीयाना कुवत और बहीमियत के मुक़ाबले में सिबाते क़दम अता फ़रमाएगी।

जब भी इन्सान के लिये उन लाफानी खूबियों के तहफ़ुज़ का मौक़ा आयेगा जो इन्सानी तवदुन का जुज़वे ला यनफ़िक़ है। उस वक़्त यही शहादत उचे टिडडी दल दुशवारियों का मुक़ाबला करने की ताब व ताक़त देगी।

(पैग़ामे इस्लाम)

### **बाबू पुरषोत्तम दास टण्डन**

(साबिक़ स्पीकर यूपी ऐसेम्बली)

शहादते इमाम हुसैन अ० हमेशा मेरे लिये एक अलमया-ए-कशिश रखती है। उस ज़माने में भी जब कि मैं कमसिन बच्चा था मैं उस अज़ीम वाक़ेरे की याद मनाने की अहमियत को समझता था। इतनी बुलन्द कुर्बानी ने जैसे कि इमाम हुसैन अ० ने पेश की है इन्सानियत को हद दर्जा बुलन्द कर दिया है। उनकी याद मनाने और क़ायम रखने के क़ाबिल है। (हुसैन अ० डे रिपोर्ट लखनऊ)

### **बी जी खैरो**

(साबिक़ वज़ीरे आला सूबा-ए-बम्बई)

इमाम हुसैन अ० ने जो सबक सिखाया है वो हमारी ज़िन्दगी के लिये चिराग़े राह है।

ये तो आसान है कि हक़ और सच्चाई के लिये अपनी जान दे दी जाये मगर ये मुश्किल है कि हज़ारो दुश्मनों के मुक़ाबले चन्द गिने चुने साथियों और रिश्तेदारों को लेकर उनका मुक़ाबला किया जाये और यके बाद दीगरे अपनी आँख के सामने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को क़त्ल होता हुआ देखा जाये।

जो सबक हुसैन अ० ने तेरह सौ बरस पहले सिखाया था वह सबक आज तक हम सिखने की कोशिश कर रहे हैं। हिन्दुओं का कोई बडा पंडित या आलम उस वक़्त तक हकीकी मानों में आलम या पंडित नहीं हो सकता जब तक कि वह हुसैन अ० के उस पैग़ाम और उसूल को न जानें।

इमाम हुसैन अ० सिर्फ़ मुसलमानों ही के नहीं बल्कि हिन्दुओं के भी हैं और हिन्दु और मुसलमान उनके नक़शे क़दम पर चल कर जुल्म व सितम के खिलाफ़ सीना सिपर हो सकते हैं। (शिया लाहौर)

## **डाक्टर रवीन्द्र नाथ टैगौर**

हुसैन अ० ने क्या सिखाया ?



ये माददी दुनिया जिसमें हम रहते हैं, उस वक़्त अपना तवाज़ुन खो देती है जब उसका रिश्ता मोहब्बत की दुनियां से ख़त्म हो जाता है। ऐसी हालत में हमें निहायत अरज़ां और फ़रोमाया चीज़ों की कीमत अपनी रूह से अदा करनी पडती है। सिर्फ़ उस वक़्त हो सकता है जब माददीयत की मुक़य्यद करने वाली दीवारें हयात की आख़री मंज़िल होने की धमकी देती है।

जब यह होता है तो बड़े बड़े तनाज़ेअ, हासिदाना फ़ितने और मज़ालिम अपने लिये जगह और मौका तलाश करने के लिये उठ खड़े होते हैं हमें उस ख़राबी की दिल गुदाज़ ख़बर मिलती है और हम सदाक़त के महदूद दायरे के अन्दर ही तवाज़ुन कायम रखने की हर मुमकिन कोशिश करते हैं। इसमें हमें नाकामियां होती हैं, उस मौके पर सिर्फ़ वही हमारी मदद करता है जो अपनी हयाते नफ़सानी से ये साबित कर दिखलाता है कि हम रूह भी रखते हैं। वो जिसका मसकन मोहब्बत की बादशाहत में है। और फिर जब हम रूहानी आज़ादी हासिल करते हैं तो माददी अशया की मसनवी कूव्वतों का ज़ोर हमारी निगाहों में ख़त्म हो जाता है। (मून लाईट लखनऊ)

## प्रोफ़ेसर रघुपति सहाय

(फ़िराक़ गोरखपुरी)

सय्यदना इमाम हुसैन अ० की बुलन्द और पाकीज़ा सीरत महसूस किये जाने की चीज़ है। ऐसे अल्फ़ाज़ का पाना आसान नहीं जो उनके किरदार की अज़मत के मुकम्मल मज़हर हों।

यूँ तो उनकी सीरत, रूहानियत और आँसूओं की सब से ज़्यादा ताबनांक रौशनी करबला के अन्दर चमकती दिखाई देती है लेकिन जो लोग हुसैन अ० के वाक़ेआए करबला से पहले की ज़िन्दगी से वाक़िफ़ हैं उनके लिये उस ज़िन्दगी की बेदाग़ और उस्तवार पाकीज़गी उसकी तशनगी, उसका ख़ुलूस और वक्रार, सदाक़त की चट्टान और सख़्त इम्तेहान के मुक़ाबले की ताक़त। ये बातें इतनी नुमायां हैं कि बिला जेहाज़ मज़हबो मिल्लत हर फ़र्द ख़िराजे अक़ीदत पेश करता है।

क्या सिर्फ़ मुसलमान के प्यारे हैं हुसैन

चर्खे नौए बशर के तारे हैं हुसैन

इन्सान को बेदार तो हो लेने दो

हर क़ौम पुकारेगी हमारे हैं हुसैन

मुझ जैसे गुनाहगार इन्सान के लिये हुसैन अ० के एखलाक़ी कमालात की सही कद्रो कीमत का अंदाज़ा लगाना ग़ालेबन अपनी क़ाबिलियत से बढ़ कर जुर्अत

आज़माई के मुतरादिफ़ होगा। हुसैन अ0 दुनिया के बड़े से बड़े खुदा रसीदा ऋषियों और शहीदों के हम पल्ला हैं। (सरफ़राज़ लखनऊ)

### पंडित गोपीनाथ अमन देहलवी

इमाम हुसैन अ0 ने जो बात कही, सीधी साधी और सच्ची कही, उन्होंने चालबाज़ियों से काम न लिया। आखिर हुसैन अ0 और उनके साथी शहीद हो गये। ये सवाल पैदा होता है कि शिकस्त किसकी हुयी? इसे दो फ़िक्रो में कहा जा सकता है कि हुसैन अ0 के जिस्म की और यज़ीद के इरादों की। ज़ाहिर बीन उसे हुसैन अ0 की शिकस्त कहें तो हक़ बीन उसे हुसैन अ0 की फ़तह कहेगी।

हुसैन इब्ने अली अ0 को सलाम जो मुदबिर और हक़ परस्त था।

हुसैन इब्ने अली अ0 को सलाम जो दिलेर होकर मुनकसिरूल-मिजाज़ था।

हुसैन इब्ने अली अ0 को सलाम जिसने इस्लाम को दाखली खतरों से बचा लिया।

हुसैन इब्ने अली अ0 को सलाम जिसने अपनी जान देकर इन्सानियत का पैगाम दुनिया को दिया।

### पंडित अमरनाथ जी

(साबिक़ वाईस चांसलर इलाहबाद यूनिवर्सिटी)

तारीखे इन्सानी के गमनांक वाक़ेआत में कोई भी वाक़ेआ इतना दिल ख़राश न होगा जितना करबला के मैदान में जंगे हुसैन अ० का ख़ात्मा है। वो ऐन सजदे में क़त्ल किये गये और शहादत का दर्जा हासिल कर गये। हमारे नज़दीक़ क़दीम सुरमाओं के कारनामों को नज़र में रखना बहुत बेहतर है कि वह लोग क्या थे और क्या कर गये।

उनकी कामयाबियाँ रूह की पुरइस्तेख़लाल फतह का बायस है जिनके लिये उन्हें सख़्त इम्तेहान से गुज़रना पडता है। (मून लाईट लखनऊ)

## मिस्टर नारायन गुट्टू

(वाइस चांसलर बनारस यूनिवर्सिटी)

आज की परेशान दुनिया में ज़रूरत है कि हज़रत इमाम हुसैन अ० की बेमिसाल कुर्बानी और ईसार की याद धूम से मनाई जाया करे।

इमाम हुसैन अ० ने एक बलन्द मक़सद के लिये मौत क़बूल की और ख़ुद को इस्लाम के एक ख़िदमत गुज़ार रखवाले की हैसियत से तारीख़ के सफ़हात में ज़िन्दाए जावेद कर लिया। (हुसैन अ० डे रिपोर्ट)

## डा0 जवाहर लाल रोहतगी एम-एल-ए

इमाम हुसैन अ0 जैसे बहादुर किसी खास मुल्क और मज़हब के हीरो नहीं समझे जा सकते।

मैदाने करबला में हुसैन अ0 और उनके रोफ़का की कुर्बानियाँ और वह बुलन्द मकासिद जिनके लिये उन्होंने अपनी जाने दीं मौजूदा ज़माने की मुबाररज तलब सब क़ौमो के लिये आँखें खोलने वाले हैं।

मुझे उम्मीद है कि हमारे मुल्क का हर आदमी करबला की तारीख़ के एक एक वरक़ का मुतालेआ करेगा और हुसैन अ0 की कुर्बानियों की तक़लीद अपने मुल्क के मफ़ाद के लिये करेगा। (हुसैन अ0 डे रिपोर्ट)

## कुंज बिहारी लाल एडवोकेट

(इलाहबाद)

बुलन्द मकासिद के लिये जंग करने वाले बुलन्द मरताबत हुसैन अ0 के जज़बाएँ ईसार व कुर्बानी की जितनी भी तारीफ़ की जाये कम है। वह पाक इन्सान उन चन्द नुफ़ूस में से था जो हर रोज़ दुनियां को नसीब नहीं होते और जब इस सरज़मीन पर उतरते हैं तो उसे आसमान की तरह बुलन्दी और अज़मत अता कर देते हैं। अपने जायज़ हक़ के लिये लडना और जान दे देना ये अम्र भी कुछ कम

दादो तहसीन का मुस्तहक़ नहीं। लेकिन वह इन्सान कितना अज़ीम-उल-मरताबत और काबिले सद तहसीन है जिसने अपने लिये नहीं बल्कि दूसरों के लिये, इस्लाम के लिये और इस्लाम के मुस्तहक़म और बुलन्द उसूलों के लिये जंग की और अपनी ही नहीं बल्कि अपने अहलेखाना तक की कुर्बानी दे दी। वह दुश्मन के मुकाबले में कमज़ोर थे, उनकी फ़ौज सिर्फ़ बहतर नुफ़ूस पर मुश्तामिल थी वह भी भूके और प्यासे। मगर हुसैन अ० और उनके साथियों ने जिस इस्तेक़लाल और शुजाअत से जंग लड़ी उसने साबित कर दिया की उनका मकसद कितना पाकीज़ा, जज़बा कितना नेक और इरादा कितना बुलन्द था।

ऐ खाके करबला तुझ पर खुदा की हज़ार-हज़ार रहमतें हों के तेरे सीने में खुदा की मुक़द्दस अमानत दफ़न है। तेरे ज़रों पर मासूम खून के फव्वारे गिरे हैं।  
(मन्शूर लखनऊ)

### **डा० एस-के-बनर्जी**

हुसैन अ० ने खुद्दारी और न मिटने वाले हक़ के सिलसिले में मकावमत करके एक शहीद की मौत मरना और तकलीफ़ उठाना पसन्द किया। दुनिया की तारीख़ के सफ़हात में वह मंज़र सब से ज़्यादा दर्दअंगेज़ है। यह मुक़द्दस हस्ती चटियल और वीरान रेगिस्तान से रवाना हुई और करबला में बहादुराना मुकाबला किया।

जिसके नतीजे में हुसैन अ0 और उनकी जमाअत के बहादुर अफ़राद को जामे शहादत नोश करना पडा। हसुन अ0 की रूहानी अज़मत का अन्दाज़ा रूह को बेचैन करने वाले उन उसूलों से हो सकता है जिनका मुज़ाहेरा उनके साथियों ने किया, जब नींद, गिज़ा और पानी सब के दरवाज़े उन पर मसदूद कर दिये गये थे, उस वक़्त उन्होंने यह ख़्वाब भी न देखा कि वह हुसैन को छोड़ कर चले जाएँ, उस वक़्त भी उन्होंने अपने दुश्मनों के खिलाफ़ कोई कलमाए बंद नहीं कहा बल्कि अपने कायद के हाथ पर हाथ रख कर उसकी दुआ हासिल करने के मुतमन्बी होकर अपनी जाने दे दीं।

हुसैन अ0 की तालीमात, अमल, पैकार और शहादत ने उन हक़ायक़ और सदाक़ती की तसदीक़ कर दी जिन पर उनके नाना जनाबे रिसालत मआब (स0) ने रौशनी डाली थी।

अपने मक़सद पर मज़बूती से कायम रहना, दुनिया के माददी मफ़ाद की परवाह न करना, उनसे क़ताए ताल्लुक़ कर लेना और मसाएब में सब्र व इस्तेक़लाल का सबक़ मैदाने करबला में इस तरह दोहराया गया जिस तरह अरब में कभी उसकी तल्कीन नहीं की गयी थी। उन्होंने अपने और अपनी औलाद के लिये ग़ैर फ़ानी कामयाबी और लाजवाब शोहरत हासिल कर ली।

करबला के शोहदा की ज़िन्दगी के साथ हुसैन अ0 के बुलन्द नस्बुलएन का खात्मा नहीं हुआ। ये नस्बुलएन अक्सर दोहराया गया और दुनिया के हर गोशे में आज भी उसकी याद ताज़ा है। (मुस्लिम रिविव)

### **डा0 एस-वी-पशीम-बेकर**

(सद्र शोबाए तारीख बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी)

हुसैन अ0 तारीखे आलम में शरीफ़ तरीन सीरत के हामिल हैं। शहादत एक ऐसा तारीखी वाक़ेआ है जिसकी अहमियत और अज़मत बढ़ती वली जाती है। इन्सान जिन बडी और अज़ीमुल मरतबत शख़्सीयतों की तारीफ़ करते और उनसे मोहब्बत करते हैं हुसैन अ0 उन पाकीज़ा हस्तियों में से एक हैं। उनमें शरीफ़ ख्याली, पाकीज़गी, सादगी और ख़ुलूस की सिफ़ात मुजतमअ थी और जो लोग दुनियां में इन्सानी मोहब्बत व इज़ज़त और अमन व सुकून के ख़्वाहिशमंद हैं उनके लिये ये सिफ़ात एक मुस्तक़िल ज़रीये इन्हाम और हसूले इन्सानियत व रवादारी है और रहेगी। ये तमाम उसूल इमाम हुसैन अ0 की ज़िन्दगी में पाये जाते हैं और इन्ही के लिये उन्होंने शहादत की मौत को अख़्तियार किया। (मून लाइट लखनऊ)



## डा० राधा कुमार मुखर्जी

(अध्यक्ष इसिहास विभाग लखनऊ युनिवर्सिटी)

तारीख जिन अजीम तरीन किरदारों से वाकिफ़ है इमाम हुसैन अ० उनमें से एक हैं। फ़ानी होकर लाफ़ानी तक पहुँच जाना, महदूद होकर लामहदूद को पा लेना यही उनकी ज़िन्दगी थी। वह थे तो एक फ़र्द मगर उन्होंने अपनी हस्ती को वुसअत देकर पूरी कायनात बना दिया। इस तरह वह इन्सनियत की मुजस्सम उम्मीद बन गये। उनकी ज़िन्दगी बताती है कि इन्सान किस तरह देवता हो सकता है। इमाम हुसैन अ० न किसी अहद के हैं, न किसी मुल्क के। आरज़ी हद बंदियां उनकी अज़मत को महदूद नहीं कर सकती। वह तमाम क़ौमों के हीरों हैं।

ये क्यों?

इसलिये कि वह उस बुलन्द तरीन मेआरे हक़ के लिये उठ खड़े हुए जो तमाम नवे इन्सानी के दिल में मुस्तक़िल तौर पर घर किये हुए है। इसी के लिये जियें और इसी के लिये मरें। उनके लिये हक़ या दीन सिर्फ़ किताबों में पढ़ लेने के लिये न था, न इस लिये था कि सिर्फ़ फ़ुर्सत के लम्हों में इतमिनान के साथ उस पर अमल किया जाये।

हक़ तो इसलिये है कि उसे अपनी ज़िन्दगी बना लिया जाये, उसे अपनी रूह में मुस्तक़िल रक्खा जाये। हक़ इमाम हुसैन अ० के खून में जारी था और उनकी हस्ती का जुज़्वे ला यनफ़िक़ था। हक़ को गोश्त पोस्त वाली ज़िन्दा चीज़ों की तरह

माददी तौर पर समझना चाहिये। ये नहीं भूलना चाहिये कि ज़िन्दगी का हर लम्हा हक़ है, उसमें दम भर के लिये भी लगज़िश न हो।

इमाम हुसैन अ० हक़ का ग़ैबी शोला बन कर चमके जिसमें नूर ही नूर था, फैलाव और हरारत थी। उनकी शुजाअत की हरारत ने उनके दुश्मनों को जला-जला कर खाक कर दिया। उनकी बेमिसाल शख़िसियत का ज़ौ-फ़िशाँ नूर आज भी ख़्याल की दुनिया रौशन किये हुए है।

ज़ैल की चन्द एक तफ़सीलात से ज़ाहिर होगा की इमाम हुसैन अ० क्यों कर अपने तमाम अफ़कार व आमाल में एक एक इन्साने कामिल ठहरते हैं उनके वालिदे बुजुर्गवार हज़रत अली अ० की शहादत उनके हिस्से में आयी थी।

हज़रत अली अ० ने अपनी ज़िन्दगी उस मक़सद के लिये वक्फ़ कर दी कि रसूले इस्लाम स० अ० के उसूलों के मुताबिक़ कुरए अर्ज़ हक़ व इंसाफ़ की हुकूमत कायम कर दें, मगर उनके दुश्मनों की ताक़त बहुत ज़्यादा थी।

रमज़ान 40 हि० को मस्जिदे कूफ़ा में नमाज़ की हालत में कातिल के एक वार ने उन्हें मौत से हमकिनार कर दिया। उन्होंने अपने बेटों को ताकीद की थी कि ताग़ूती ताक़त के साथ हक़ की जंग को जारी रखें।

तख़्त जो ख़ाली हो गया उसके लिये अहले कूफ़ा की मुताफ़िक़ राय से इमाम हुसैन अ० का इन्तेखाब किया गया मगर अभी उन्हें अपनी फ़ौजों को अज़सरे नौ

तरतीब देने का वक़्त भी न मिला था कि दुश्मनों की फ़ौजें उन पर छा गयीं और उन्हें ख़िलाफ़त मुआविया के सिपुर्द करके मदीने में ख़ाना नशीन होना पडा।

मुआविया के बदकार बेटे यज़ीद ने मुआविया के बाद ख़िलाफ़त को ग़स्ब कर लिया। उस शख़्स की बदअतवारी और मय नोशी पूरे इस्लाम की नफी थी। उसके अहद में हालात तेज़ी से ख़राब होते चले गये। इस्लाम की क़िस्मत में ग़ौर करने के लिये इमाम हुसैन अ० ही रह गये थे। इस शदीद ग़ौरो फ़िक्र में न उन्हें दिन को चैन था न रात को नींद। आख़िरकार उन्होंने तय कर लिया कि जो भी हो मैं गासिब यज़ीद की फ़ौजो का मुक़ाबला करके हक़ की कुर्बान गाह पर अपनी जान की कुर्बानी पेश करूँगा।

अक़ीदे की नाक़ाबिले मुक़ाबला ताक़त ने उकसाया और वह अपने अज़ीज़ो, औरतों और बच्चों की छोटी सी जमाअत को लेकर मदीने से चले, उन्होंने करबला के मैदान में अपने ख़ेमें नस्ब किये और दुश्मन ने दरियाए फ़ुरात से पानी लेने के ज़राए मस्टूद कर दिये।

इनफेरादी मुक़ाबले में बनी फ़ात्मा की कुवत नाक़ाबिले शिकस्त थी क्योंकि उसमें कादिरेमुत्लक़ की दी हुई हरारत शामिल थी। लेकिन दुश्मन के तीर अन्दाज़ों ने एक महफूज़ फ़ासले से एक-एक करके सबको क़त्ल कर डाला यहाँ तक कि रसूले खुदा स० का नवासा दीन का तन्हा मुहाफ़िज़ रह गया। उन्होंने उनके बेटों और भतीजों को भी उनकी आग़ोश में क़त्ल कर डाला। तब उन्होंने ज़िन्दगी की परवाह

किये बगैर यज़ीदियों पर हमला करके उन्हें हर तरफ़ से पीछे हटा दिया। लेकिन ज़ख्मों की कसरत से इमाम हुसैन अ० ग़श खाकर ज़मीन पर पहुँचे। एक कातिल ने उनका सर काट लिया और उनकी लाश को घोड़ों की टापों से पामाल कर दिया।

उसूलों की पैरवी में ऐसी ज़बरदस्त कुर्बानी तारीख़ में अपना जवाब नहीं रखती। इमाम हुसैन अ० इन्सानियत के एक बहुत बड़े हीरो हैं। ज़िनकी याद को हर ज़माने और हर मुल्क में मनाना चाहिये, वह अब भी एक ज़िन्दा ताक़त हैं जिससे मुनासिब मौक़ो पर हमें मदद माँगना चाहिये और जिसकी याद इस तरह मनानी चाहिये जिस तरह फ़ितरत अपने मआरकों की याद मनाती है। ग़ैर फ़ानी अज़मत के एजाज़ में यादगारी तक़रीबों को गर्दिश में रहना चाहिये। सूरज की तरह, चाँद की तरह, मौसमों की तरह। उसी बाक़ायदगी के साथ। उसी तकरार के साथ, यही तरीक़ा है जिससे फ़ानी इन्सान अपने अन्दर ग़ैर फ़ानी जलवा देख सकता है।

(हुसैन अ० डे रिपोर्ट लखनऊ)

## **प्रोफ़ेसर आत्मा राम एम-ए**

(होशियारपूर)

ऐसी फ़िज़ा में जबकि हिन्दू मुस्लिम कशीदगी अपने उरूज पर है, एक ग़ैर मुस्लिम का एक मुस्लिम रहनुमा को ख़ेराजे अक़ीदत पेश करना, बज़ाहिर ताज्जुब ख़ेज़ है और मुमकिन है मेरे हिन्दू भाई मेरे इस फ़ेल को अच्छी नज़र से न देखें

मगर उनके पास उसका क्या इलाज है कि हुसैन अ०, जिसे मैं खेराजे अक़ीदत पेश कर रहा हूँ अपनी मुनफ़रिद शख़्सीयत, अपनी उलुलअज़मी, अपने बुलन्द और पाकीज़ा मक़ासिद, अपने किरदार और अपनी हिम्मत व हौंसले की वजह से तारीख़े इस्लाम ही नहीं तारीख़े आलम में बेनज़ीर हैसियत का मालिक है।

दुनिया के बड़े-बड़े इन्सानों और खास तौर पर शोहदाए आलम की ज़िन्दगियों पर नज़र डालो और बताओ की मक़ासिद की पाकीज़गी, इरादों की बुलन्दी, बे खौफ़ी और मसायब का मर्दानावार मुक़ाबला करने वाला कोई और शहीद नज़र आता है ?

जिन हालात में तकालिफ़ की शिद्दत और तवालत में हुसैम इब्ने अली अ० ने अपना इम्तेहान दिया और कामयाबी हासिल की, ऐसा सनद याफ़ता कोई और है?

फिर उसमें क्या ताज्जुब है अगर मैं ग़ैर मुस्लिम होते हुए एक मुस्लिम शहीद की बारगाह में नज़रानाए अक़ीदत पेश कर रहा हूँ जो दर हक़ीक़त सिर्फ़ मुस्लिम शहीद ही नहीं बल्कि शहीदे इन्सानियत है।

काश इस बदकिस्मत मुल्क के हम बदकिस्मत वासी हिन्दू मुसलमान के बजाए इन्सान के नुक़ताए निगाह से ग़ौर करना सीखें।

काश हम महदूद मफ़ाद के बजाए वसीअ मफ़ाद को पेशे नज़र रक्खें तो हम बिलातफ़रीके मज़हबो मिल्लत हुसैन अ० के सामने सरे नियाज़ झुका देंगे, और इस तरह हक़ीक़ी माअनों में उस अज़ीमुश्शान इन्सान की याद मनायेंगे जो अपनी

ज्ञात के लिये नहीं बल्कि सारी इन्सानियत के लिये शहीद हो गया। (ज़मींदार लाहौर)

## प्रोफ़ेसर विश्मभर नाथ सक्सेना एम-ए

(हैदराबाद सिंध)

मोहम्मद स० अ० और हुसैन अ० अगर तारीखे इस्लाम से इन दो नामों के निकाल दीजिये तो कुछ बाकी ही नहीं रहता। अक्वल उज़-ज़िक्र ने अमल कर दिखाया। अक्वल उज़ ज़िक्र ने आवाज़ दी और सानीउज़ ज़िक्र ने लब्बैक कहा।

इस्लाम मजमुआ है दो अल्फ़ाज़ इल्म और अमल का। मोहम्मद स० अ० इल्म थे और हुसैन अ० अमल, इन दोनों के मजमुए से इस्लाम की तारीख बनती है अगर हुसैन अ० अपने खून से मोहम्मद स० अ० के इल्म को अमल न बनाते तो बाज़ मोतारेज़ीन के नज़दीक दीन का अमली पहलू कमज़ोर रह जाता।

किस कद्र अज़ीम और मुक़द्दस था वह इन्सान जिसने अपना खून देकर दीन की तकमील कर दी और मोतारेज़ीन को ऐतराज़ का मौक़ा ने देने के लिये अपनी जान देने गवारा कर लिया।

काश मेरे हिन्दू भाई गौर करें और देखे कि वह मज़हब कैसे बातिल हो सकता है जिसके परस्तारों में ये रूह कारफ़र्मा है कि अपनी जान देकर अपने मज़हब की

सदाक़त साबित करते हैं और जिसके मामूली पैरो ही नहीं बल्कि उसके अकाबिर, बानी-ए-मज़हब के नवासे और दूसरे रिश्तेदार तक वक़्त आने पर कुर्बानी से गुरेज़ नहीं करते। हुसैन अ० और उनके साथियों ने जो कुर्बानियाँ दीं और हौलनांक मसायब उन्होंने सहे वह तारीख़ में अपनी मिसाल नहीं रखते।

उन्होंने जिस हिम्मत, इस्तेक़लाल और बहादुरी से हक़ के खातिर बातिल से जंग लड़ी, ये जान लेने के बावजूद की अंजामेकार हम क़त्ल कर दिये जायेंगे, वह इस क़ाबिल है कि सारा आलम उससे सबक़ सीखे और अपनी ज़िन्दगियों को उस साँचे में ढाल दे जिसमें हुसैन अ० की ज़िन्दगी ढली थी। अगर यूँ हो जाये तो हर तरफ़ आशती का राज हो जाये। (अलअमान देहली)

### **प्रोफ़ेसर एस-सी-सेन**

वाक़ेआत को मददे नज़र रखते हुए कुछ क़ाबिले हैरत नहीं कि ऐसी शहादत जो हुसैन अ० की ज़िन्दगी का आख़री और मुमताज़ तरीन कारनामा था आलमे इस्लाम में हर साल जोश व मोहब्बत और ग़म व अंदोह का वो बड़ा ज़बरदस्त तुफ़ान बर्पा कर दे जिसका आलमगीर मुज़ाहेरा मोहर्रम में किया जाता है।

मुबारक है वह क़ौम जिसकी गोद में ऐसा अदीमुल मिसाल हीरो पैदा हुआ और क़ाबिले सदफ़ख़ हैं वो लोग जो ऐसी ज़ात की कुर्बानियों को ज़िन्दा-ए-जावेद बनाने

की पुरखुलूस कोशिश करें और जिन उसूलों के खातिर ये कुर्बानियाँ दी गयीं उनको नमुनाए हयात तसव्वुर करते हुये अपनी ज़िन्दगी को अपने मुताबिक चलाने की भरपूर ख्वाहिश रखते हों। (सरफ़राज़ लखनऊ)

## प्रोफ़ेसर राजकुमार शर्मा

(लुधियाना)

हुसैन अ0 की ज़िन्दगी और मौत दोनों काबिले रश्क और इल्मे इन्सानियत के लिये एक नमूना है। वह ज़िन्दा रहे तो एक पाकबाज़ इन्सान की हैसियत से। अगर वह यज़ीद की बैअत करके उसे अपना खलीफ़ा तसलीम कर लेते तो दुनिया की कौन सी नेमत थी जो उनके क़दमों में न डाल दी जाती और वह कौन सा मनसब था जो यज़ीद उन्हें न देता। इस सूरत में वह दुनियावी जहा व सरवत तो हासिल कर लेते लेकिन नेक नामी के साथ हमेशा की ज़िन्दगी से महरूम रह जाते।

उन्होंने यज़ीद की बैअत न की और दुनियावी जहा व सरवत और आरज़ी इमारत व मनासिब को ठोकर मार दी, क्योंकि ऐसे शख्स की बैअत उनकी जैसी अज़ीमुलमरताबत हस्ती के शायानेशान न थी। वह इसके खिलाफ़ सफ़ आरा हो गये क्योंकि वह उन्हें एक ऐसे काम के लिये मजबूर कर रहा था जो इस्लाम की रूह का खात्मा कर देने वाला था। उन्होंने अपनी रूह का खात्मा गवारा कर लिया



मगर अपने मज़हब की रूह का फ़ना होना ग़वारा न किया जिसका नतीजा यह हुआ कि न इस्लाम फ़ना हुआ और न हुसैन अ०, हुसैन अ० भी ज़िन्दा रहे और इस्लाम भी। (इत्तेहाद लाहौर)

### **प्रोफ़ेसर बी-बी मोज़मदार एम-ए**

(अध्यक्ष इतिहास विभाग पटना यूनीवर्सिटी)

इमाम हुसैन अ० की अहम ज़िन्दगी का अहम सबक यह है कि बातिल को बहादुरी के साथ रोकना चाहिये, और जबकि दूसरे लोग ख़ामोशी से यज़ीद के मज़ालिम से इत्तेफ़ाक़ कर रहे थे उस वक़्त इमाम हुसैन अ० ने उसके खिलाफ़ बहादुरी के साथ उठने का इरादा फ़रमाया। आपकी अच्छी तरह अपने क़वी दुश्मन के मुक़ाबले में अपनी ज़ाहरी ताक़त का इल्म था। मगर यह अम्र बनी उमय्या की बदअमली के खिलाफ़ ऐहतेजाज में मानेअ न हुआ। आपको ख़तरात का इल्म था मगर आपके लिये नामुमकिन था कि अपनी ज़िन्दगी में दुनियावी आराम की खातिर बातिल से सुलह कर लेते। आपको मौत और अज़ीयतों से ख़ौफ़ न था। अपने और अज़ीज़ो के सख़्त मसायब से आपके इरादे मुताज़लज़िल न हुये क्य़ोंकि आपको इल्म था कि हर चीज़े फ़ानी हैं बाजुज़ "ज़ाते बारी" कि जिसने अपनी

कुदरते कामला से तमाम चीज़ों को पैदा किया और जिनको वह अपनी ताकत से फ़ना कर देगा।

मैदाने करबला में उस ज़िन्दगी का आगाज़ देखा जो इमाम हुसैन अ० के लिये ग़ैरफ़ानी है और जुल्म व इस्तेब्दाद पर हक्कानियत की फ़तह है। हर मज़हब में शोहदा मौजूद हैं मगर सिवाए इस्लाम के किसी और मज़हब को इमाम हुसैन अ० जैसा शहीद मयस्सर न हुआ, जिसकी शहादत बनी नवे इन्सान के लिये दायमी इफ़ादीयत रखती हो। (हुसैन अ० दी मारटर)

## **प्रोफ़ेसर नापटा अमीका एम-ए**

(बनारस यूनीवर्सिटी)

उस नाज़ुक मौक़े पर इमाम हुसैन अ० ने जो हज़रत अली अ० के दूसरे बेटे थे इस्लाम के मुक़द्दस पैग़ाम और रवायत को अपनी बेनज़ीर शहादत से बचा लिया। करबला में आपकी कुर्बानी ने आपकी ज़बरदस्त एखलाख़ी ताकत का सबूत दिया और इस्लाम को अस्ल हालत में रख लिया। आप इस्लाम और मक़सदे इस्लाम के लिये खड़े हुए थे और मज़हब के आला उसूलों में आप इंसाफ़, मसावत व उख़वत, एखलाख़ी और रूहानी ज़िन्दगी के मुजस्समें थे।

बुराईयों और हुक्काम के बूरे कामों के खिलाफ़ इन्क़ेलाब की रूह लोगों में पैदा हो गई। उसका लाज़मी नतीजा मज़हब व सियासत में इस्लाह व इन्क़ेलाब था। लोगों के ख़्यालात और ख़िदमात फिर एक मरतबा आला मंज़िल पर पहुँच गये जिस्से उनकी ज़िन्दगी में यकगुना तरक्की हुई। एक हद तक आपकी शहादत उनकी नजात और उनके ज़वाल को रफ़ा करने का बायस हुई। बनी उमय्या के पास आला मकासिद और पैग़ाम न था। उनकी ज़ाहरी फ़ुतुहात उनकी फ़ौजी ताक़त और क़ातिलाना तरीक़ो का नतीजा थी। वे औरतों और बच्चो तक का लेहाज़ न करते थे। फ़ात्मा स0 अ0 के लाल ने अपनी शहादत से उन बुनाईयों को दूर किया और अपनी बेनज़ीर और आला मिसाल पेश करके इस्लाम की सच्ची तालीमात को बचा लिया। (हसैनी दुनिया)

## पंडित व्यास देव

(एम-ए, एल-एल-बी, पी-एच-डी)

कुछ साल गुज़रे मैंने एक मातमी जुलूस देखा था। ये मंज़र मेरे लिये बहुत ही दर्दनाक था। मैंने इरादा कर लिया कि मैं इस मसअले का पूरा मुताअलेआ करूंगा।

मैंने कदीम तारीखी वाक़ेए को खुद पढ़ा और दीगर मज़ाहिब की किताबों में देखा। मेरा ख़्याल है कि अगर एक साहेबे दिल हसद व तास्सुब से दूर होकर और मज़हबी कीना को छोड़कर वाक़ेए करबला पर ग़ौर करे तो यह कहे बग़ैर नहीं रह सकता कि इमाम हुसैन अ० की ज़ाते गिरामी की मिसाल किसी दूसरे मज़हबो मिल्लत में नहीं मिल सकती।

सिर्फ़ चन्द घंटो में हुसैन अ० की बहतर कुर्बानियां (जिसमें हुसैन अ० के भाई, भतीजे, लडके और चन्द निहायती पुरखुलूस दोस्त शामिल थे।) हमें यह सबक सिखाती हैं कि इन्सान को अगर कोई बड़ी ताक़त जाबेराना और नाजायज़ तरीक़े से दबाना चाहे तो इन्सान चाहे कितना ही कमज़ोर हो उसका मुक़ाबला करे और अपनी इज़ज़त और हकूक के लिये फ़ना हो जाए। अपने अहलो अयाल को कुर्बान कर दे मगर ज़िल्लत से ज़िन्दा रहना गवारा न करे।

इमाम हुसैन अ० जानते थे कि यज़ीदी फ़ौज के मुक़ाबले में उनकी फ़ौजी कुवत कुछ भी नहीं मगर फिर भी उन्होंने इरादा कर लिया था कि वह जुल्म व सितम की बुनियाद को हमेशा के लिये मफ़कूद कर देंगे।

हुसैन अ० के छः माह के बच्चे की कुर्बानी देना ज़ाहिर करता है कि उनको ममलिकत और जाह व इक़बाल की ख़्वाहिश न थी बल्कि उनका मक़सद बहुत आला व अरफ़ा था और यकीनी तौर पर वह अपने मिशन में कामयाब हुए।

मेरा ख्याल है कि अगर दुनिया के तमाम मज़ाहिब इमाम हुसैन अ० के पैरो हो जाये तो दुनिया के तमाम झगडे खत्म हो जायें।

इमाम हुसैन अ० ने यज़ीद से यह नहीं कहा कि मैंने जंग इस लिये की है कि अगर मुझे फ़तह हासिल हुई तो मैं अरब का नाम हुसैनाबाद रक्खूंगा। आप जंग हक़ और इस्लाम की सरबुलन्दी के लिये और जुल्म व सितम को मिटा देने के लिये थी।

हुसैन अ० का वाक़ेआ बताता है कि जब तुम जायज़ मुतालबे के लिये क़दम बढ़ाओगे तो तुम्हें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। (जद्दो जहद)

## पंडित चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु

हुसैन अ० को जब हम इन्सानी नुक़ताए नज़र से देखते हैं तो आप मैं उन तमाम सिफ़ात को नुमाया पाते हैं जिन से इन्सान इन्साने कामिल बन जाता है। हुसैन अ० को हम हर पहलू से कामिल पाते हैं और यह कह उठते हैं कि हुसैन अ० एक ऐसा अनमोल हीरा हैं जिसे जिस पहलू से देखो बे ऐब व बेश किमत है। हुसैन अ० वह खुशनुमा गुलाब हैं जिसका हर जुज़ अपनी खुबसूरती और खुशबू से दिल को खींच लेता है। हुसैन अ० एक ऐसा खरा सोना हैं जिसे जितने परखा जाये खुसरंग निकलता आयेगा। हुसैन अ० वह आफ़ताब हैं जिसमें हर रंग मौजूद है और

वाक़ेअ करबला एक ऐसा वाक़ेआ है जिसमें बाप, बेटा, भाई, बहन, बीवी, शौहर, दोस्त व अकरूबा सब के फ़रायज़ की हद बन्दी का अमली नमूना है। उसमें दीनी व दुनियावी ज़िन्दगी का कामिल नक़शा मौजूद है। बल्कि उसमें सियासी जद्दोजहद और सियासी मुश्किलात का भी नुमाया हल मौजूद है।

अगर ग़ौर से देखा जाये तो दीन व दुनिया का कोई ऐसा सवाल नहीं जिसे इमामे हुसैन अ० ने अपने कारनामों से हल न कर दिया हो। हज़रत हुसैन अ० का कोई काम अधूरा नहीं, हर काम मुकम्मल है, क्योंकि कामिल इन्सान का हर फ़ेल कामिल होता है। ( शहीदे इन्सानियत)

## दीवान बहादुर के-एम झवेरी

(साबिक चीफ़ डीन फ़ेकल्टी आफ़ ला मुम्बई)

एक अज़ीम मिशन के लिये खुदा की एक मुख्तसर फ़ौज बातिल के असाफ़िर से टकराई और वक़ती तौर पर बातिल की फ़ौज को फतह भी नसीब हुई।

इमाम हुसैन अ० जानते थे कि जंग का नतीजा क्या होगा फिर वह यज़ीद से क्यों लड़े?

उन्होंने हक़ व सदाक़त की खातिर जंग की। उस तमाम अहद में उनकी मिसाल तारीकी में नूर की शमां बन कर रौशनी फैला रही है। (हुसैनी दुनिया)

## मुंशी प्रेमचन्द

(मशहूर अफ़साना निगार)

मारकाए करबला दुनिया की तारीख में पहली आवाज़ है और शायद आखरी भी, जो मज़लूमों की हिमायत में बुलन्द हुई और जिसकी सदा आज तक फ़िज़ाए आलम में गूँज रही है।

हुसैन अ0 को खिलाफ़त की मोहब्बत कूफ़े में नहीं लाई थी, न वह जंग के इरादे से आये थे। अगर उन्हें यज़ीद से जंग करनी होती तो वह लावोलशकर लेकर आते। हुक्मरानी और मुल्कगीरी की हवस उनको न थी। न ये हवस उनके नफ़से आली को डांवाडोल कर सकती थी। वह कूफ़ियों की दावत पर महज़ अमे हक़ की दस्तगीरी के लिये आये और जानबूझ कर आये। इस मारके का अंजाम उनसे पोशीदा न था। वह ख़ूब जानते थे की करबला की खाक गुबार बन कर उडेगी। लेकिन वह आली हिम्मत सदाये दर्द सुनकर दिल पर काबु न रख सकते थे।

ये मारका ईसार और कुर्बानी की ज़िन्दा-ए-जावेद दास्तान है। एक तरफ़ कुल सत्तर या बहत्तर ज़ी रूह हैं जिनमें ज़्यातर बूढ़े, ज़ईफ़ हुसैन अ0 के बच्चे और बीमार हैं। दुसरी तरफ़ एक कसीर फ़ौज है (टिडडी दल) सामाने हर्ब से लैस। अगर हुसैन अ0 के ईसार और कुर्बानी के लेहाज़ से ये सानेहा बेमिसाल है तो शायद

मुखालेफीने हुसैन अ0 की दगा व फरेब बहीमियत और नफसानियत के ऐतबार से बेनज़ीर है।

कूफ़े के ज़ालिमों! तुमने सरवत और जागीर, मरतबा और मनसब हासिल करने के लिये उस पाक नफ़स बुजुर्ग के साथ दगा की जो सिर्फ़ तुम्हारी सदाए दर्द सुनकर तुम्हारी हिमायत करने के लिये सर बकफ़न होकर आया था। न वह सल्तनत रही, न वह सरवत रही, न वह मरतबा और न वह मनसब, तुम्हारी हड्डियां तक पेवन्दे खाक हो गईं। तुम्हारी पेशानी पर कलंक का टीका अभी तक लगा हुआ है और क़यामत तक लगा रहेगा।

तुमने किस के साथ दगा की? हुसैन अ0 के साथ जो तुम्हारे नबी के नवासे थे, मकरूहाते रोज़गार से अलग, ख्वाहिशात से दूर। तुम्हारी दगा ने दुनिया में कितना बड़ा इन्क़ेलाब पैदा कर दिया क्या तुम इसे जानते हो? (सरफ़राज़ लखनऊ)

## स्वामी शंकराचार्य

कमोबेश जुमला मज़ाहिब के रहबरान ने इशाअते मज़हब में कुर्बानियां पेश की हैं लेकिन जैसा कि हुसैन अ0 की कुर्बानियों में असर देखा ऐसा मैंने किसी भी कुर्बानी में नहीं देखा और यही वह चीज़ है जिसने इस्लाम को बाक़ी रख लिया वरना आज दुनिया में इस्लाम का नाम लेने वाला कोई भी मौजूद न होता। (शिया लाहौर)



## बाबू काली बदआमबर जी नीशानाथ राय

सातवीं सदी ईसवी के आखिर में जबकि यज़ीद फ़रमानरवाये दमिशक की सरकारदगी में अवाम के एक गिरोह ने इस्लामी मक़सद के खिलाफ़ अलमे बगावत बुलन्द किया तो मुत्तकी व परहेज़गार हुसैन अ0 ने मज़हब व सदाक़त की हिमायत के लिये करबला के मैदान में शुजाअत व बहादुरी के साथ अपनी जान की कुर्बानी पेश कर दी। माददी तौर पर यज़ीद को फ़तह हासिल हुई लेकिन रूहानी हैसियत से उसकी यह फ़तह शिकस्त साबित हुई। वह इस्लाम को जो सूरत देना चाहता था वो सूरत व बुनियाद बहुत जल्द मादूम हो गई।

हुसैन अ0 की शहादत का नतीजा फ़तह व कामरानी की सूरत में निकला और इस्लाम यानि सच्चे और हकीकी इस्लाम ने अज़सरे नौ नशोनुमा हासिल की।

फ़ख़रे इन्सानियत हस्तियों का ये मज़हबी फ़रीज़ा रहा है कि वह अवाम कि दिमागी तरबियत व तालीम का सामान बहम पहुँचाये, वह उस राह में दुनियां के रंज और मसायब का कोई लेहाज़ नही रखते। कृष्ण जी ने एक शिकारी के हाथों जान गंवाई। मसीह की ज़िन्दगी का ख़ात्मा भी अफ़सोसनांक हुआ लेकिन मज़हब के मुताल्लिक उन्होंने जो रास्ता दिखाया वह अब तक इन्सानों को मनफेअत पहुँचा रहा है।

मुकद्दस हुसैन अ० की अलम अंगेज़ कुर्बानी ने ज़लालत की तारीकी का खात्मा कर दिया और नई रौशनी फैला दी। वह कुर्बानी आज हज़ारों मुस्लिमों और गैर मुस्लिमों में इस जज़्बे को मोहर्क कर रही है कि फ़रायज़ अदा करने में जान के जाने और मौत के आने की परवाह नहीं करना चाहिये। आज जबकि क़ौमियत की रूह बेदार हो रही है हमको दुआ करनी चाहिये की इसमें और इज़ाफ़ा हो। (हुसैन अ० दी मार्टर)

## ऐ-के-आचार्य

(जर्नलिस्ट मद्रास)

इमाम हुसैन अ० की अज़मत का इससे बढ़कर और क्या सबूत हो सकता है कि तक़रीबन साढ़े तेरह सौ साल से उनकी याद में करोडो इन्सान आँसू बहा रहे हैं। और सिर्फ़ मुसलमान ही नहीं बल्कि रह मज़हब व मिल्लत के लोग उन्हें ख़ेराजे अक़ीदत पेश करते हैं।

बलन्द नसब, आलातरीन शख़्सीयत, ऐख़लाख़ी ऐक्तेदार की हिफ़ाज़त और जुल्म के ख़िलाफ़ मुस्तक़ील मिजाज़ी से डट जाना। यह वह ख़ुसूसियात हैं जिनकी मौजूदगी से हज़रत हुसैन अ० को हमेशा की ज़िन्दगी हासिल हुई।

इमाम हुसैन अ० ने सख्त से सख्त मुश्किलात का मुकाबला किया। अपनी आँखों के सामने अपने जवान और शीरखवार बच्चों को ज़िबह होता देखा मगर अपने मौक़िफ़ पर चट्टान की तरह डटे रहे और आख़ीर में अपनी मुसीबत ज़दा ख्वातीन और बीमार बेटे को खुदा के सहारे छोड़ कर खुद भी खून के समन्दर में तैर कर पार उतर गये।

उन मसायब को तसव्वुर करके जो इमाम हुसैन अ० को पेश आये इन्सानी हिम्मत जवाब दे देती है। आफ़रीन है उस अज़ीम इन्सान पर जो उन तमाम मराहिल से बड़ी पामरदी और इस्तेक़लाल से गुज़र गया।

ऐसे अज़ीम इन्सान की याद में सरे अक़ीदत ख़म कर देना हर इन्सान के लिये बायेसे फ़ख़्र है जो दुनिया से जुल्म व इस्तेबदाद, गुनाह व फ़िस्क़ व फ़िज़ूर का खात्मां चाहता है।

काश आज भी दुनिया हज़रत इमाम हुसैन अ० के बताये हुए रास्ते पर चले तो जुल्म व सितम और फ़िस्ख़ व फ़िज़ूर का खात्मा हो जाये। (मक़ामें हुसैन अ०)

## जे-आर गोडे एडवोकेट

(बम्बई)

दुनिया में हुसैन अ० के अलावा और भी बहुत से इन्सान शहीद हुए, हुसैन अ० पहले शहीद न थे मगर जब हम उन वाक़ेआत पर नज़र डालते हैं जिनसे हज़रत इमाम हुसैन अ० को गुज़रना पडा और उन मक़ासिद पर ग़ौर करते हैं जिनके लिये हुसैन अ० ने अपनी और अपने साथियों की जाने कुर्बान की तो तसलीम करना पडा है कि हुसैन अ० से बढ़कर कोई शहीद दुनिया की इब्तेदा से लेकर आज तक पैदा ही नहीं हुआ।

उन्होंने हक़ की इशाअत, इन्सानियत की बक़ा, इस्लामी उसूलों की हिफ़ाज़त और मुलूक़ियत के ख़ात्म के लिये जो जद्दो जहद की और ऐसी शदीद तकलीफ़े बर्दाश्त की जिनसे अम्बिया भी शाज़ो नादिर ही दो चार हुए होंगे। इसलिये कोई वजह नहीं के उन्हें तारीख़े आलम का अज़ीम किरदीर करार न दिया जाये और उनकी कुर्बानियों को फ़रामोश कर दिया जाये। उनकी पाकीज़ा ज़िन्दगी, उनकी आला तालीम, उनकी अज़म व अमल और इस्तेक़लाल व शुजाअत रहती दुनिया तक इन्सानियत की रहनुमाई करती रहेगी। वो रौशनी की मिनार हैं, मंज़िल के मुतालाशी उनसे रौशनी हासिल करके मंज़िल की तरफ़ बढ़ते रहेंगे। (मक़ामे हुसैन (अ))

## लाला दीनानाथ

(एडीटर वीर भारत)

बुजुर्ग हस्तियाँ ख्वाह उनका ताल्लुक किसी भी मज़हब से हो हमारे नज़दीक वाजेबुल ऐहतेराम हैं और ग़ैर मज़हब के रहनुमा की इज़ज़त करना एक ऐसा वस्फ है जो हिन्दुओं को अपने ऋषियों से विरसे में मिला है। यही वजह है कि ब्रह्मा समाज जैसी सोसायटियाँ हिन्दुओं में कायम हुयीं और अब भी हिन्दुओं की सरपरस्ती और मदद से चल रही हैं।

अंदरी हालात अगर हम अरब के इस शहीदे आज़म को खेराजे तहसीन अदा करते हैं तो उसका मक़सद मुसलमानों को खुश करना नहीं बल्कि दर हक़ीक़त एक अज़ीमुश्शान शख़िसियत का मुतालेआ करना और इन्सानियत के तर्कों अपना फ़र्ज़ अदा करना है। (पैग़ामे इस्लाम)

## सी-एस-रंगा आर्य

(साबिक एम-एल-ए)

अगर हुसैन अ0 की ज़िन्दगी और कुर्बानी के मक़सदे आला को समझ लिया जाये तो हर हिन्दु, शिया, सुन्नी और हर अंग्रेज़ बिल्कुल उस नतीजे पर पहुँचेगा कि पस्त सियासत हुसैन अ0 की नज़र में बेकार थी। अपने दुश्मन की फ़ौज में

तफ़रिखा अन्दाज़ी या फूट डालने की कोशिश का ख़्याल भी उनके दिमाग़ में न था, वो अपने ही साथियों को फ़रमाते थे कि मुतफ़र्रिक हो जाओ और मेरे साथ अपनी जान न दो। मगर उनके मुट्ठी भर असहाबे बा वफ़ा के क़दमों को जुंबीश न हुई और उन्होंने अपनी ज़िन्दगी की आख़री साँसो तक उनका साथ दिया। मौत की तलख़ी और हयात की शीरीन भी उनको अपने आका से जुदा न कर सकी इसलिये की वह लोग हुसैन अ0 में तजल्लियाते इलाही का मुशाहेदा कर रहे थे।

हुसैन अ0 दुनियावी मक़सद रखते ही न थे। बस उनका मक़सद यह था मुस्तक़बिल में तारीक और यज़ीद परस्त दुनिया के लिये एक मिसाली इन्सान, एक नूरे हिदायत और एक ग़ैर फ़ानी रहनुमां साबित हों। उन्होंने मौत को ख़ुद दावत नहीं दी बल्कि यज़ीद की बैअत और अपने ज़मीर का ख़ून करके ज़िन्दा रहना उन्हें गवारा न था इस लिये कि वह ना अहल, फ़ासिक और इस्लाम से कोसों दूर था।

वह बा ख़ुशी किनाराकशी कर लेते अगर यज़ीद शैतान का बन्दा न होता बल्कि हुसैन अ0 की तरह ख़ुदा का बरगुज़ीदा बन्दा होता।

अगर हुसैन अ0 को हुकूमत मिलती तो उनकी हुकूमत ज़मीन पर आसमानी की हुकूमत होती। ताहुम मरने के बाद भी वह ऐसी हुकूमत कर रहे हैं जो कोई हुकमरान नहीं कर सकता। वो लाजवाब तक़तो ताज के मालिक हैं, वो हमारे ग़ैर फ़ानी बादशाह हैं। उन्होंने फ़ितरते इन्सानी का ग़ैर महदूद वुसअत अता फ़रामाई

है। हुसैन अ0 के वफ़ादार आसमान के सितारों की तरह जगमगा रहें हैं। नस्ले इन्सानी जब तक सफ़हए हस्ती से खुद न मिट जाये उनके कारनामों को फ़रामोश नहीं कर सकती। (मून लाईट)

## हिज़ हाईनेस महाराजा जीवाजीराव सिंध्या

(ग्वालियर)

आज से तेरह सौ साल कबल करबला के खूनी मैदान में जो हौलनांक और दर्दअंगेज़ सानेहा वजूद में आया था उसकी यादगार हर साल मोहर्रम के महीनें में सारी दुनिया में मनाई जाती है। रसूले खुदा स0 अ0 के प्यारे नवासे इमाम हुसैन अ0 ने ज़ालिम के मुक़ाबले का पुख़्ता इरादा कर लिया था। वो जौर व ताअददी के सामने सर झुकाने को तैयार न थे, उनमें अक़ीदे और ज़मीन की पुख़्तगी थी, उन्होंने एक बड़ी और ताक़तवर फ़ौज का दन्दाशिकन मुक़ाबला किया, वह और उनके साथी उस जंग में शहीद हुए।

दुश्मन के जुल्म व सितम का मुक़ाबला आपने खुदा के इंसाफ़ पर ऐतमाद रखते हुए अपने अटल इरादे, अपनी बुलन्द हीम्मती और उस मुस्तहक़म अक़ीदे से किया कि चाहे उस वक़्त जो कुछ भी हो मगर आखिर फ़तह सदाक़त को नसीब होगी।

तारीखे इस्लाम का यादगार ये वाक़ेआ, अक्रायद के ऐखतेलाफ़ और नस्ल व रंग और मज़हब के तंग नज़रीयात से बालातर है और इस काबिल है कि नस्ले इन्सानी उसको अपने दिलों में जागुर्ज़ीं करे और कुर्बानियों की परवाह किये बगैर अदाये फ़र्ज़ की अहमियत को समझ ले।

उन्हीं जज़्बात के तहत उस अज़ीमुश्शान हीरो की ख़िदमते आलिया में उसकी बरसी के मौक़े पर हदियाए खुलूस पेश करता हूँ।

मुझे यकीन है कि उस ज़िन्दा-ए-जावेद शहीदे आज़म की कुर्बानी हमेशा उन लोगों के दिलों में जोश और ताज़गी पैदा करती रहेगी जो इंसाफ़, आज़ादी और इज़्ज़त व आबरू के लिये अपनी जानें देने से गुरेज़ नहीं करते।

(हुसैनी पैग़ाम बम्बई)

## राजा महेश्वर दयाल सेठ

(एम-एल-सी, ताल्लुक़ेदार कोटर)

इस बड़ी और शानदार कुर्बानी का क्या भेद है।

ज़ाहिरी और इजमाली नुक़तए नज़र से वाक़ेआत को देखकर ये लोग महसुस करते हैं कि हुसैन अ0 ने भूख, प्यास, दुख, दर्द और रंज व ग़म की तकालीफ़ बर्दाश्त की, लेकिन जब हम इन वाक़ेआत पर ज़रा गौर और बलन्द ख़्याली और



रूहानी नुक़ताए नज़र से ग़ौर करते हैं तो यही मालूम होता है कि एक बड़ी आत्मा उनमें मौजूद थी और वह एक बड़ी आत्मा में थी।

हुसैन अ0 ने एक अज़ीमुल मरतबत और शानदार कुर्बानी हक़ और इन्सानियत की हिफ़ाज़त के लिये पेश की। उनकी शहादत इन्सानियत के लिये मुसलसल दर्स है कि हक़ व इंसाफ़ कभी दबाये नहीं जा सकते और बिल आख़िर फ़तह ख़िरफ़त पाते हैं। तारीख़े इस्लाम में पैग़म्बरे इस्लाम के बाद वह सबसे बड़ी हस्ती कहे जा सकते हैं। सदाक़त, इंसाफ़ और फ़र्ज़ की कुर्बानगाह पर उन्होंने तेरह सौ साल पहले उन्होंने अपने आप को भेंट चढ़ाया लेकिन एक बलन्द और आला मफ़हूम में वो आज भी ज़िन्दा हैं और फ़र्ज़ शिनासी, ज़ुरत और हुब्बुल वतनी के पैग़ाम के साथ हमेंशा ज़िन्दा रहेंगे। (हुसैन अ0 डे रिपोर्ट)

## महाराजा सर हरकिशन प्रसाद

हज़रत इमाम हुसैन अ0 की शहादत एक ऐसा वाक़ेआए अज़ीम है जो न कभी पहले हुआ और न तारीख़ बाद में उसका मुक़बिला ला सकी। मलल मा फ़िह और उनकी तारीख़ अगर इसी तरह कुबूल कर ली जाये जिस तरह इस वक़्त हमारे सामने मौजूद है तब भी उनका कोई शहीद या सिलसिलाए शोहदा मुश्किल से हमारे शहीद की अज़मत व शराफ़ते आमाल का मुक़ाबला कर सकेगा। औलियाए

मज़ाहिब और उनकी तकलीफ़े हुसैन अ0 के अंबोहे मसायब पर ग़लत अंदाज़े नज़र से भी थर्रा जायेगी। किसी सलीब ज़दा जिस्म की चन्द कीलें हुसैन अ0 के जिस्में अक़दस में लगने वाले बेशुमार तीरों और नैज़ों की अनियों के सामने बे हकीक़त होगी।

इस हकीक़त की तारीख़ दुश्मनों ही की ज़बान और क़लम ने हमारे हवाले की, हुसैन अ0 का दोस्त वाक़ेआनिगार कोई ज़िन्दा न छोडा गया। अगर कोई वाक़ेआनिगारी कर सकता तो अली इब्नुल हुसैन अ0 या मुक़द्दराते इस्मत कर सकती थीं, लेकिन इमाम ज़ैनुलआबेदीन अ0 अपनी क़ैद से बहुत पहले बिस्तरे अलालात पर मोक़य्यद थे और परदा नशीन बीबीयाँ हुसैन अ0 की ज़िन्दगी तक बैरूनी हालात से बहुत कुछ बेख़बर थी। लेकिन हुसैन अ0 की शहादत के बाद न सिर्फ़ अली इब्नुल हुसैन अ0 अपने बिस्तरे अलालात से खिंचे गये कि वह उसके बाद के वाक़ेआत देखे बल्कि मुक़द्दराते इस्मत व तहारत ने भी ये दिखाया कि हमें अपने तक्राज़ाये ग़ैरत के खिलाफ़ आलम की निगाहें देखती होंगी।

इमाम हुसैन अ0 की शहादत ने तारीख़े इस्लाम पर आम इससे कि वह गुज़िश्ता हो या आइन्दा ऐसी रौशनी डाली है जिससे वाक़ेआत का असली रंग मालूम हो गया और साबित हो गया कि दुश्मनों ने ख़ानदाने रिसालत मिटा देने के लिये किस क़द्र शर्मनांक कोशिश की थी। कोई घर आलम में ऐसा तबाह व बर्बाद न हुआ होगा जैसा कि ख़ानदाने रिसालत तबाह व बर्बाद हुआ।

सहराए करबला में हवा क्या बुरी चली

पानी तलब किया तो गले पर छुरी चली

दुनिया में कोई छोटा सा लश्कर इस शान से दुश्मन के मुकाबले में खड़ा नहीं हुआ, जैसे हुसैन अ० के ये चन्द बच्चे, जवान और बूढ़े रोक़ा खड़े थे। उस ज़मीन पर ऐसा वक़्त और इत्तेफ़ाक़ पैदा नहीं हुआ जिसमें इतने टिडडी दल लश्कर के मुकाबले में बावजूद गर्मी व प्यास की शिददत के ये छोटा सा लश्कर मुतमईन और मुंतज़िर खड़ा था। शायद ही किसी लश्कर को अपनी शिक्सत और किसी सिपाही को अपने क़त्ल का ऐसा यक़ीन हो जैसा हुसैन अ० के लश्कर और सिपाहियों को था और शायद ही कोई लश्कर इस यक़ीन के बाद इस इस्तेक़लाल इस शान और शहादत के शौक़ में अपनी मौत का ऐसा मुन्ताज़िर हो और उनकी ये बेखौफ़ी, मसायब पर सब्र व इस्तेक़लाल और जान से लापरवाही न होती अगर वजह ऐसी अज़ीम न होती और शायद बावजूद वजह के भी दुनिया का यह हैरत अंगेज़ वाक़ेआ, वाक़ेए की सूरत में न आता अगर मरकज़ ऐसा न होता जैसे हुसैन अ० थे। इब्ने साअद के लश्कर की ताअदाद कम से कम तीस हज़ार और इमाम हुसैन अ० के लश्कर की ताअदाद ज़्यादा से ज़्यादा बहतर नफ़ूस पर थी।

लश्करे हुसैनी के एक-एक जांबाज़ सिपाही ने अपने दिल को सिपाहीयाना होश में बल्कि शहादत के जोश में और मौत की जल्दी के लिये दुश्मनों पर दे मारा, असहाबे हुसैन अ० हज़ारों काफ़िरों को खाक व खून में आलूदा करके आलमें राहत

की तरफ रूखसत हो गये और आखीरकार हुसैन अ० ने भी जामें शहादत नोश फ़रमाया। बहादुरी में दर्जा अक्वल हुसैन इब्ने अली अ० का है। उन्होंने भूक व प्यास के बावजूद हज़ार हा दुश्मनों का सामना यको तन्हा किया। उन पर बहादुरी का खात्मां है।

हकीकतन आपको क़त्ल करके हुसैन अ० के दुश्मनों ने तकबीरो तहलील को क़त्ल कर डाला। हज़रत मौलाना रूम ने तारीख़ का मिसरा क्या ख़ूब फ़रमाया है।

सरदी रा बुरीद बैद 61 हि० (सरफ़राज़ लखनऊ)

## दीवान बहादुर हर बिलास शारदा

(एफ़-आर-एस-एल)

हज़रत इमाम हुसैन अ० इस्लाम के मशाहीर की सफ़ में एक बलन्द मरतबत हीरो का कर्जा रखते हैं। आपने जो बलन्द और आला कुर्बानी पेश की और जिस स्प्रिट में सदाक़त और इज़्ज़त के लिये अपनी जान दी वह इस बात की रौशन मिसाल है कि एक इन्सान जिसके दिल में आलातरीन जज़्बाते ख़िदमाते नवेइन्सानी मुतहरिक हो क्या कुछ कर सकता है और उसे क्या करना चाहिये।

हज़रत इमाम हुसैन अ० की ज़िन्दगी एशिया और अफ़रीका के करोड़ों मुसलमानों की ज़िन्दगी और करेक्टर को सही रास्ते पर ला रही है और उन्हें बता

रही है कि ज़िन्दगी के इन शदाएद व मसायब का किस तरह सामना करना चाहिये जिनसे मर्दों और औरतों को आये दिन दोचार होना पडता है और जिनमें तहज़ीबे नौ की बदौलत रोज़ बरोज़ इज़ाफ़ा होता दिखाई देता है।

इमाम हुसैन अ० के शुजाआना कारनामों के मुताल्लिक़ दुनिया को जितना ज़्यादा मालूमात हासिल होती जायेगी और उनके हालात को जिस क़द्र ज़्यादा नश्र किया जायेगा हम सब लोंगों के लिये उतना ही सूदमन्द होगा।

इसलिये कि हुसैन अ० की ज़िन्दगी और शहादत से हम यह सबक़ हासिल कर सकेंगे कि हम अपनी ज़िन्दगी का मेआर किस तरह बलन्द कर सकते हैं। ( हुसैन अ० दी मार्टर)

## किशन प्रसाद

न फ़क़त दुनियाए इस्लाम बल्कि अज़ आगाज़ ता अंजाम कोई मिसाल दुनिया में वाक़ाये रूह फ़रमाये अरज़े नैनवा के मिस्ल दूढ़े से भी न मिलेगी। ये सानेहा अपनी नवहययत और अहमियत के लेहाज़ से अपनी मिसाल खुद ही हो सकता है। वाक़ेआये करबला ही एक ऐसा वाक़ेआ है जिसके जज़दात पर नज़र डालने से इन्सान को तहज़ीबे एखलाख़ का पूरा मैदान हाथ आता है। मज़लूम इमाम हुसैन अ० ने जिस इस्तेक़लाल और मज़बूत इरादे के साथ दुनिया में सदाक़त और हक़

का अलम गाडा वह सिर्फ़ उसी की ज़ात से हो सकता था जिस को खुदा ने ऐसा बहादुर दिल दिया हो।

## महाराजा होलकर आफ़ इंदौर

आज जिस जलसे को तमाम अक्रवाम व मज़हब के लोग मुश्तरका तरीक़े से कर रहे हैं जिसमें इमाम हुसैन अ0 के इस कारनामें से सबक़ हासिल करेंगे जिसमें आपने आज़ादी के लिये वहशीयाना ताक़त का मुक़ाबला करते हुए अपनी जान की बाज़ी लगाकर वह अज़ीमुश्सान कुर्बानी दिखाई जिसने हक़ और इंसाफ़ को दुनियां में क़ायम कर दिया।

अगर तमाम मुल्क में इस क़िस्म के जलसे होने लगे तो मुझे यक़ीन है कि तमाम क़ौमों और मज़हबों में इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ हो जायेगा।

## हिज़ हाईनेस सर नटवर सिंह

(महाराजा आफ़ पोरबन्दर)

कुर्बानियों के ज़रिये तहज़ीबों का इरतेक़ा होता है। हज़रत इमाम हुसैन अ0 की न सिर्फ़ मुसलमानों के लिये बल्कि पूरी नस्ले इन्सानी के लिये एक क़ाबिले फ़ख़्र

कारनामे की हैसियत रखती है। मौजूदा दौर में जबकि ज़ाती व नस्ली नफ़रतें अपने उरुज पर हैं और क़त्ल व ग़ारत का बाज़ार हर तरफ़ गर्म है क्या हम सर के बल तबाही के ग़ार में नहीं गिर रहे? कोई अपाए नहीं सिवाए इसके कि हज़रत इमाम हुसैन अ० की शहादते उज़्मा को मशअले राह बनाया जाये। हमारी ज़िन्दगी में अमन व सुकून सिर्फ़ और सिर्फ़ हज़रत इमाम हुसैन अ० और उनके रफ़ीको की कुर्बानियों को पेशे नज़र रखते हुए हक़ व सदाक़त के रास्ते पर क़दम आगे बढ़ाने ही में मुज़मर है। हज़रत इमाम हुसैन अ० ने अपना सब कुछ एक आला मक़सद के लिये कुर्बान कर दिया। उन्होंने जान दे दी लेकिन इन्सानियत के रहनुमा उसूलों पर आँच नहीं आने दी। दुनिया की तारीख़ में ऐसी दूसरी मिसाल नज़र नहीं आती है। हज़रत इमाम हुसैन अ० की कुर्बानी के ज़ेरे क़दम अमन व मसरत दोबारा बनीनवे इन्सान को हासिल हो सकते हैं बशर्ते कि इन्सान उनके नक़शे क़दम पर चलने की कोशिश करे।

## पंडित सुन्दर लाल

(हिन्दू आलिम रहनुमा और मुसन्निफ़)

तारीख़ के आला मक़सिद के लिये और हक़ व सदाक़त के रास्ते में बहुत सी कुर्बानियों के वाक़ेआत को महफ़ूज़ किया है। इन में सबसे बलन्द कुर्बानी हज़रत

इमाम हुसैन अ० की है जो तेरह सौ साल कबल करबला के मैदान में पेश की गई थी। गुज़िशता तेरह सौ साल में जिस तरह हर मुसलमान हुक्मरान बादशाह ने सिर्फ अपनी ताकत के ज़रिये अपनी हुकूमत को इस्लामी कहलवाया है उस से इस्लाम इब्तेदा में ही खत्म हो जाता अगर इमाम हुसैन अ० और उनकी मुखतसर सी जमाअत अपने खून का नज़राना पेश करके इस्लाम को मुकम्मल तबाही से न बचा लेती। मेरी प्रर्थना यह है कि उनकी और उनके कारनामों की याद हम सब को मुतास्सिर करने के लिये हो और हम में मोहब्बत और यगानगत के जज़्बात पैदा कर सके।

हमें एक दूसरे के जज़्बात और ख्यालात की कद्र करनी चाहिये और अपनी कोताहियों पर भी नज़र रखनी चाहिये। उनकी याद मनाने से हमारा तज़किये नफ़स होना चाहिये ताकि हमारे दिलों में से बुग्ज़ व हसद और इन्तिक़ाम की ख्वाहिशात मिट जायें और गुनाहगार अपने गुनाहों से तौबा करलें।

## मेला राम फरानी

इस्लाम के बहादुरों ने अहले दुनिया के जिस क्रिस्म की शुजाअतों के लासानी नमूने दिखाये हैं वो इन्सानी अक़लो और फ़हमों को गुम कर देने वाले हैं। मौला मुश्किल कुशा अली इब्ने अबी तालिब अ० की शुजाअत किसी से पोशीदा नहीं है।



फिर हुसैन अ0 की बहादुरियाँ और कुर्बानी ऐसी नहीं कि जिन्हें भुलाया जा सके। करबला के खौफनाक मैदान में आपने जो दिलावरी दिखाई उसके नज़ीरे नायाब हैं। अहलेबैत अ0 के तमाम अफ़राद की बेमिसाल बहादुरियाँ और कुर्बानियाँ तारीख़ में मज़कूर हैं। गरज़ की तारीख़ों में ऐसी बेबाकी और ज़ुरतमन्दी के नमूने बिल्कुल ही नादिर व नायाब हैं।

## जी-आर-गोदी

(मशहूर हिन्दुस्तानी एडवोकेट)

इमाम हुसैन अ0 पहले शहीद नहीं हैं अगर हम आपकी शहादत को उस ज़ावियाए निगाह से देखें तो हमें कोई खास बात नज़र नहीं आयेगी लेकिन अगर हम उन वाक़ेआत को देखें जिनसे इमाम अ0 को दोचार होना पडा और उन मक्कासिद पर ग़ौर करें जिनके लिये इमाम हुसैन अ0 और उनके साथियों ने अपनी जाने कुर्बान की तो उस वक़्त ये तसलीम करना पडेगा कि इमाम हुसैन अ0 से बडा शहीद दुनिया की इब्तेदा से लेकर आज तक पैदा नहीं हुआ। आपने हक़ की राह, इन्सानियत की बक्रा, इस्लामी उसूलों की हिफ़ाज़त और मुलूकियत के खात्में के लिये जद्दो जहद की और शदीद तकलीफ़ें बर्दाश्त की। यही वजह है कि आप

तारीखे आलम के अज़ीम किरदार हैं आपकी तालीम, अज़म व इस्तेक़लाल और शुजाअत रहती दुनिया तक इन्सानियत की रहनुमाई लिये रौशन मीनार है।

## **राईट आनरऐबिल एम-आर-जियारकर**

(जज फ़ीडरलकोर्ट इंडिया)

कई बरस से मेरी ये तमन्ना थी कि हिन्दू मुसलमान एक दुसरे के मुक़द्दस अय्याम और पैग़म्बरों का दिन मिलझुल कर मनाया करें। तेरह सौ साला हुसैन अ0 डे पर मेरी तमन्ना पूरी होती हुई नज़र आई और मैं बारगाहे हुसैनी में अपना नज़राने अक़ीदत पेश करता हूँ।

मुझे यह भी तवक्क़ो है कि मुसलमान साल ब साल इस अज़ीम तरीन कुर्बानी की याद मनाते हुए इस मेआरे हक़ व सदाक़त को भी सामने लायेंगे जिस ने पूरी बनीनवे इन्सान के लिये तरक्की और कामयाबी का दरवाज़ा खोल दिया।

## **दीवान बहादुर कृष्ण लाल**

(साबिक़ चीफ़ जस्टिस मुम्बई)

मुझे हुसैन अ० डे की तकरीबात में से एक की सदरत का मौका मिला और मैंने देखा कि हज़ारो सामेईन अदब व ऐहतेराम से तकरीर सुन रहे हैं। सामेईन की तवज्जो के मेरे नज़दीक दो सबब हो सकते हैं। अक्वल यह कि करबला के वाक़ेआत इन्तेहाई अलमनांक है और हर सुनने वाला उनमें मुतास्सिर होता है। दायम ये कि मारकाए करबला में हक़ और बातिल का मुक़ाबला हुआ और बज़ाहिर फ़तह बातिल कुवत को होई थी। आख़ीर इमाम हुसैन अ० ने यज़ीदी फ़ौज का मुक़ाबला क्यों किया जबकि वह जानते थे कि नतीजा क्या होगा? ये सवाल लोगों की तवज्जो अपनी तरफ़ खींचता है। उसके साथ यह हकीक़त कि इमाम हुसैन अ० ने अपने गिनती के चन्द साथियों के साथ हज़ारों की तादाद पर मुश्तमिल फ़ौज से मुक़ाबला किया, किसी दुनियावी मक़सद के लिये नहीं बल्कि हक़ व सदाक़त का मेआर कायम करने के लिये। ये मिसाली कुर्बानी एक मशाल की तरह रहती दुनिया तक अंधेरो में बनीनवे इन्सान की रहनुमाई करती रहेगी।

## डा० जे-ऐ-कोलाको

(साबिक़ मेअर बम्बई)

इमाम हुसैन अ० अब दुनिया में मौजूद नहीं लेकिन उनके कारनामों हमारे सामने हैं। उनकी याद हममें सच्चाई की तहरीक पैदा करती है और बातिल से मुक़ाबला

करने के लिये हमारे हौसले बुलन्द करती है। हक व सदाकत के रास्ते में मुश्किलात व मसायब बर्दाश्त करने की ताब पैदा करती है। सिर्फ़ मुसलमानों के लिये ही नहीं बिला इम्तियाज़ क़ौम व मज़हब व मिल्लत तमाम इन्सानों के लिये इमाम हुसैन अ० की कुर्बानी एक ऐसा नमुने अमल है जो ज़िन्दगी के रास्तों की तारीकियों को क़यामत तक के लिये दूर करने और रहनुमाई करने के लिये काफ़ी है।

### **बाबू राजेन्द्र प्रसाद**

मैं हज़रत इमाम हुसैन अ० की बडी क़द्र करता हूँ और उन्हें इन्सानियत का अलमबरदार तसव्वुर करता हूँ। बिला तफरीके मज़हब इमाम हुसैन अ० की कुर्बानी सब को दर्से सदाकत देती है।

### **महात्मा गांधी**

शहीद की हैसियत से इमाम हुसैन अ० की मुक़द्दस कुर्बानी ने मेरे दिल में सना व सिफ़त का लाजवाब जज़्बा पैदा किया है। क्योंकि आप ने भूख व प्यास की

तकलीफ़ और मौत को अपने और अपने बच्चों और खानदान के लिये पसन्द किया मगर ज़ालिम क़वतों के सामने सर नहीं झुकाया।

## श्री स्वामी गुंजानन्द

(सद्र अछूत लीग ढाका)

हम खुश हैं कि अछूत लोग जो इस मुल्क के अस्ल बाशिन्दे थे यज़ीदियों की बड़ी कोशिशों के बावजूद मिट न सके और सदका इमाम हुसैन अ० का है। यही वजह है कि हम इमाम हुसैन अ० के मक़ाम को समझते हैं, परखते हैं और उनकी क़द्र करते हैं। उनकी मज़लूमित की दास्तान और उनके ज़िक्र को ग़ौर से सुनते हैं, समझते हैं और परखते हैं। आज दुनियां के बड़े-बड़े मुल्क और हुकूमतें अम्न की दावत दे रहीं हैं। सब से ज़्यादा अमेरीका अम्न का प्रचार करना चाहता है। इमाम हुसैन अ० के पैग़ाम को अगर अमेरीका अपना ले तो दुनिया में अम्न व अमान कायम हो सकता है और हर तरह की बेचैनी दूर हो सकती है। जिस तरह इमाम हुसैन अ० ने बदी और नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ अपना हक्क़ानी परचम बलन्द किया था। यज़ीद ने उनसे कहा था बैअत कर लो। ये बात क्या थी? इस बैअत के माअनी सनद या सर्टिफ़िकेट देना था कि यज़ीद जो बुराईयां कर रहा है और जो

बेइंसाफ़ियाँ कर रहा है हज़रत इमाम हुसैन अ० उसकी सनद दे दें के वो जायज़ हैं। मगर हज़रत इमाम हुसैन अ० ने सर देना मन्ज़ूर किया बदी की इजाज़त न दी और इन्साफ़ को हाथ से जाने न दिया।

आज ये ऐतराज़ किये जाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन अ० मजलिस बर्पा की जाती है, उनकी याद में मरसिये पढ़े जाते हैं और बाजे बजाये जाते हैं। अस्ल हकीकत यह है कि यज़ीद और उसके मानने वाले साथी चाहते थे कि इमाम हुसैन अ० का नाम मिट जाये। लेकिन हम उसके मुक़ाबले में आज भी डंके की चोट पर हज़रत इमाम हुसैन का नाम ले रहे हैं। उसके बरअक्स यज़ीद के लिये कहीं ठिकाना नहीं, उसका चिराग़ जलाने वाले कोई नहीं।

आज मशरिकी बंगाल में 55 लाख के करीब अछूत रहते हैं, वहाँ जो कौमे आबाद हैं उन्हें सख्त ज़रूरत है कि इमाम हुसैन अ० के मिशन को कायम करके उनके मुबारक उसूलों को फैलाते जायें। इसी तरह चटगाम के इलाक़े में भी बड़ी ज़रूरत है बल्कि जिस तरह घरों में यादे इमाम अ० की मजलिस कायम होती है उसी तरह मैदानों में भी बरमला जलसे किये जायें और अलम बुलन्द करके कहा जायें कि हम अली अ० की गवर्मेन्ट कायम करेंगे। इमाम हुसैन अ० नाम ही भलाई और इंसाफ़ का है। नेकी और बदी हमेशा आपस में लडती रही है। हमारा फ़र्ज़ है कि हम बदी मिटायें और नेकी को फैलायें।

## मिसेज़ सरोजनी नायडू

हज़रत इमाम हुसैन अ० ने आज से तेरह सौ साल क़ब्ल दुनियां के सामने जो पैग़ाम और उसूल पेश किया था वो इतना बेनज़ीर और मुकम्मल था कि आज हम उसकी यादगार मना रहे हैं। मेरे पास ऐसे अल्फ़ाज़ नहीं और न दुनिया की कोई ऐसी फ़सीह व बलीग़ ज़बान है जिसके ज़रिये मैं उन जज़्बाते अक़ीदत को बयान कर सकूँ जो उस शहीदे आज़म के लिये मेरे दिल में पाये जाते हैं। हज़रत इमाम हुसैन अ० सिर्फ़ मुसलमानों के नहीं बल्कि रब्बुलआलमीन के सारे बन्दों के लिये हैं।

मैं मुसलमानों को मुबारकबाद देती हूँ के उनमें एक ऐसा बुलन्द इन्सान गुज़रा है जिसे दुनियाँ की हर क़ौम यकसां तरीक़े सा मानती है और उसकी इज़ज़त करती है।

आपने हुसैन डे कमेटी बम्बई के नाम अपने पैग़ाम में कहा:

करबला का दर्दनाक सानेहा आज भी वैसा ही ताज़ा, वैसा ही दर्दअंगेज़ और वैसा ही असर खेज़ है जैसा कि उस रोज़ था जब इस्लाम का यह बहतरीन रहबर शहीद किया गया था। तेरह सौ साल बाद भी इमाम हुसैन अ० कि मिसाल हक़ व हुरियत की तलाश रखने वालों की रहनुमाई के लिये रौशनी का मिनार बनी हुई है। उनकी

जात तमाम ऐखतेलाफ़ात से बालातर है, वक़्त और ज़माने की क़ैद से आज़ाद है और बुराईयों के मुक़ाबले में सदाक़त की फ़तह का लाफ़ानी निशान है।

आपने हैदराबाद दक्षिण मे इजलास यादगारे हुसैनी के मौक़े पर जो पैग़ाम भेजा वो हस्बे ज़ैल है।

जब लोग मरते हैं तो उनकी याद भी मौसम ख़ेज़ा पत्तों की तरह ग़ायब हो जाती है और ख़त्म हो जाती है लेकिन हज़रत इमाम हुसैन अ0 किस्मते इन्सानी की उन नादिर और मुंनतख़ेबा हस्तियों में से हैं जिनके नाम उफ़के तारीख़ पर एक सितारे की तरह जगमगा रहे हैं। शायद की किसी और हस्ती को इस्लाम के उस हरदिल अज़ीज़ रहनुमा की तरफ़ ऐसी ग़ैरफ़नी शौक़त और हुस्न नसीब हुआ हो। शायद ही कोई किस्सा इतना आलमनांक और दिलदोज़ हो जितना की वाक़ेआए करबला है, जो आज तेरह सदियों के बाद भी लाखो करोडो इन्सानों को खून के आँसू रूलाने की क़ाबलियत रखता है। तेरह सदियों के बाद भी उस मुक़द्दस शहादत की अज़मत व शौक़त जुल्म व बातिल के ख़िलाफ़ कशमाक़श की आलातरीन निशानी है और इन्सानी आज़ादी और हक़ परस्ती की राह में सब से बड़ी हुई इन्सानी कुर्बानी भी।



हुसैन अ० से सिक्खों की अकीदत

## महाराजा जगजीत सिंह बहादुर

(वाली कपूर थला)

इंसानी तारीख में शहीदों का मरतबा बहुत बलन्द है और शोहदा चाहे वह किसी मुल्क या क़ौम के हों हर मज़हब व क़ौम के लिये काबिले इज़्ज़त हैं। कोई पाबन्दे उसूल हरगिज़ ये कह नहीं सकता कि शहीद किसी ख़ास क़ौम या ज़माने का रहनुमा हैं। बल्कि शहीदों की रौशन मिसालें हर फ़र्दे बशर के लिये सबक़ आमोज़ हैं और इसी नुक़ताए नज़र से हज़रत इमाम हुसैन अ० की शहादत के वाक़ेआत सारी दुनिया के लिये काबिले मुतालेआ हैं।

मुझे यक़ीन है कि हज़रत इमाम हुसैन अ० की शुजाअत याद रखने के लिये सिख, हिन्दू, ईसाई दिल से शामिल होंगे। मेरा ये पैग़ाम मामूली या रस्मी पैग़ाम नहीं बल्कि मेरे ख़्यालात का सही अक्स है। (रज़ाकार लाहौर)

## सरदार ख़नाँ सिंह, एम-ए

(प्रोफ़ेसर लुधियाना कालेज)

सिख क़ौम की रवायत हमेशा से बहादुरी और शुजाअत से वाबस्ता रही है इसलिये कोई वजह नहीं कि वो दूसरे मज़हब के बहादुरों की इज़्ज़त न करे। इमाम

हुसैन अ0 की इज़्जत करना तो सिक्खों के नज़दीक एक लाज़मी अम्र है। उन्होंने करबला के मैदान में अपने मुट्ठी भर साथियों की हमराही में टिड्डी दल लश्कर का जिस पामर्दी से मुक़ाबला किया और बड़ी से बड़ी मुश्किल को जिस तरह हँस खेलकर बर्दाश्त किया उसने उनका मरतबा इस क़द्र बुलन्द कर दिया के वह बहादुरानें आलम में मुमताज़ जगह परा फ़ायज़ हैं। उन्होंने अपनी और अपने अहले खानदान हता कि शीरखवार बच्चे की जान तक कुर्बान करना गवारा कर लिया मगर जुल्म व सितम और फ़िस्क व फ़िज़ूर के आगे सरे तस्लीम ख़म करना गवारा न किया।

उन्होंने हक़ की खातिर बड़ी मर्दानगी से जंग की। कौन कहता है कि वह दुश्मनों के मुक़ाबले में शिकस्त खा गये। शिकस्त तो उनके दुश्मनों को हुई जिन पर आज तक दुनिया लानत भेज रही है और फ़तह हज़रत इमाम हुसैन अ0 की हुई जिन की गुलामी का दावा बड़े-बड़े फ़रमानरवायाने आलम फ़ख़्र से करते हैं। (सरोश बम्बई)

**सरदार जसवंत सिंह एम-ए**

(लन्दन)

हज़रत इमाम हुसैन अ० ने अपने लिये नहीं बल्कि दूसरों के लिये जान दी। उनकी कुर्बानी शहीदों में सबसे ज़्यादा बुलन्द है। उन्होंने अपनी कुर्बानी किसी खुदगर्जाना मक़सद के लिये पेश नहीं की थी बल्कि सिर्फ़ हक़ व इंसान को बुलन्द करने के लिये दी थी।

दुनियां की तारीख़ में बेशुमार लड़ाइयां लड़ी गयीं लेकिन करबला की लड़ाई अपनी अहमियत के लेहाज़ से बेहद नुमांया जंग थी। क्योंकि यहाँ हम को यह दिखाई देता है कि नेकी और बदी की कूवतें अपने इन्तेहाई दरजा-ए-कमाल पर पहुँच कर एक दूसरे के खिलाफ़ सफ़ आरा थीं।

हज़रत इमाम हुसैन अ० सदाक़त और फ़र्ज़ शनासी का मुजस्समा थे। जो सख़्तियाँ उनको बर्दाश्त करना पड़ीं वह इतनी अंदोहनांक हैं कि एक संग दिल को भी तोड़ देती हैं लेकिन हुसैन अ० के क़दम को अदाए फ़र्ज़ में ज़रा भी लगज़िश नहीं हुई। उन्होंने निहायत बहादुरी से मौत का मुक़ाबला किया। लेकिन क्या हुसैन अ० मर गये? नहीं वह आज भी ज़िन्दा हैं। वह गिरे नहीं बल्कि बलन्द हो गये और तब से अब तक और ज़्यादा बलन्द हो चुके हैं। हुसैन अ० ज़िन्दा हैं और आख़ेरत तक ज़िन्दा रहेंगे। अलबत्ता यज़ीद जो यह समझता था कि वह अपनी कुवत की बदौलत जो कुछ चाहे कर सकता है, ख़त्म हो गया। (हुसैन अ० डे रिपोर्ट लखनऊ)

## सरदार करतार सिंह एम-ए-एल-एल-बी

(एडवोकेट हाईकोर्ट पटियाला)

बज़ाहिर मुसलमान औसतन ग़रीब हैं लेकिन मुसलमान सबसे ज़्यादा अमीर हैं क्योंकि हुसैन अ० जैसी शख़्सियत उन्हें विरसे में मिली। अगर आप हुसैन अ० को भूल जायें तो उसका नतीजा नुकसान ही नुकसान होगा।

हज़रत मोहम्मद सुस्तफ़ा स० अ० से पहले दुनिया इस नुक़ते से नाआशना और बेगाना महज़ थी। जज़बाए शहादत मुसलमानों ने ही दुनियां को दिया। उन्होंने उसे लफ़ज़ की हैसियत से ही दुनिया के सामने पेश नहीं किया बल्कि उसे अमली जाअमा भी पहनाया और उस सिलसिले में बेहतरीन नमूना शहादते शोहदाये करबला है।

हुसैन अ० ने अपनी कुर्बानी और शहादत से उन्हें ज़िन्दा कर दिया और उन पर हिदायत की मोहर लगा दी। हुसैन अ० का उसूल अटल है और अटल रहेगा। हुसैन अ० ने जो क़िला तैयार किया है उसे कोई गिरा नहीं सकता। क्योंकि यह क़िला पत्थर और चूने नहीं बल्कि इन्सानि ज़िन्दगी और खून से तैयार किया गया है। हुसैन अ० ज़माने की सियासी बातों के नब्ज़ शनास थे, करबला के मैदान में हुसैन अ० ने जो हरबे इस्तेमाल किये वह इन्साफ़, प्रेम और कुर्बानी हैं। हुसैन अ० का

कैरक्टर बरतर व बाला है। हुसैन अ0 इंसाफ, प्रेम और कुर्बानी के देवता हैं। (हुसैनी दुनिया)

## सरदार सन्त सिंह

(एडीटर इन्साफ़ व प्रेसीडेन्ट यू पी सेन्ट्रल सिख दीवान)

हर हक़ शनास शख्स जिसे खुदा ने अक़ले सलीम अता की है वो वाक़ेआते करबला के ग़ैर जानिबदाराना मुताअले के बाद इस नतीजे पर पहुँचे बग़ैर नहीं रह सकता कि हज़रत इमाम हुसैन अ0 ने जो जंग लड़ी वह उनकी ज़ाती न थी, बल्कि इन्सानियत व हक़ परस्ती की हिमायत की जंग थी। हज़रत ज़ाती तौर पर जंग और ख़ूं रेज़ी को पसन्द न करते थे। इसी वजह से जब उन्होंने मदीने में जंग की साज़िशो के आसार देखे तो मक्का तशरीफ़ ले गये और जब मक्के में जंग के बादल मंडराते हुए पाये तो कूफ़े चले गये। हज के अय्याम में, जबकि इस्लामी दुनिया मक्के मुनव्वरा की ज़ियरत के लिये उमड रही हो मक्के से वापसी कोई आसान काम न था। हज़रत को ख़िलाफ़े मामूल हाजियों ने वापस जाते देखा तो उनके हैरत व इस्तेजाब की कोई हद न रही और अक्सर हाजी बेऐख़ितयार कह उठे कि या हज़रत यह क्या माजरा है कि इस्लामी दुनिया तो हस्बे माअमूल हज के लिये मक्के की तरफ़ आ रही है और आप ख़िलाफ़े मामूल मक्के से वापिस जा रहें

हैं? लेकिन हज़रत जंग के हामी न थे इसलिये उन्होंने जंग की साअते बद को टालने के लिये हज जैसे अहम फ़र्ज़ की अदायगी से महरूम रहना भी गवारा कर लिया और हाजियों की हैरत और परेशानी को दूर करने के लिये हज़रत ने नेहायत खन्दा पेशानी के साथ फ़रमाया: मैं खुदा की राह में कुर्बान होने जा रहा हूँ।

नरमी, मतानत और सनजीदगी हज़रत के विरसे में आयी थी जबकि मुखालेफ़ीन जुल्म, फिरऔन मिजाज़ और तकब्बुर में दुनिया का रिकोर्ड मात कर रहे थे। अपने इस आख़री वक़्त में भी हज़रत ने नरमी, मतानत और सनजीदगी के औसाफ़ को हाथ से न छोडा और यहाँ तक कि मुलायमियत की इन्तेहा कर दी कि अपने एक पैग़ाम के ज़रिये से आपने मक्के या मदीने में गोशानशीन होने या यज़ीद की सल्तनत से बाहर किसी मुल्क में जाने की आमादगी ज़ाहिर की। लेकिन उस वक़्त ज़ालिम यज़ीद और उसके हवारी हज़रत इमाम हुसैन अ० और उनके अज़ीज़ व अक्रारिब के खून के प्यासे थे। इसलिये उन्होंने "बैअत" या "क़त्ल" का जवाब देकर हज़रत इमाम हुसैन अ० की उस शरीफ़ाना पेशकश को भी ठुकरा दिया।

अब आख़री मौक़े पर इमाम हुसैन अ० के सामने सिवाये इस के कोई चारा ना रह गया था कि यातो वह भी दुनिया के दीगर कमज़ोर और बुज़दिल इन्सानों की तरह यज़ीद जैसे फिरऔन व बदकार से बैअत करके महज़ अपनी ज़ाती जाह व हशमत के लिये अपने बुजुर्गों और दीने इस्लाम की नामूस को खतरे में डाल दें या

हक व सदाकत के रास्ते पर शहीद होकर आइन्दा दुनिया के लिये शम्मा-ए-हिदायत साबित हों।

चुनान्चे हज़रत ने अपनी जान और अपने साथियों और अज़ीज़ व अक्रारिब को भेंट चढ़ाकर शहादत और कुर्बानी की वो नज़ीर कायम कर दी जिस के मुतालेए से आज तेरह सौ साल बाद भी एक पत्थर से पत्थर दिल इन्सान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मुखालेफ़ीन यह समझे हुए थे कि हज़रत इमाम हुसैन अ०, उनके भाई हज़रत अब्बास अ०, उनके नन्हें भान्जों, भतीजों और छः माह के शीरख़वार बच्चे अली असगर अ० को तहे तेग करके उन्होंने हज़रत इमाम हुसैन अ० की इमामत को हमेशा के लिये ख़त्म कर दिया है। लेकिन उन्हें यह मालूम नहीं था कि जिसे मिटाने के मन्सूबे वह बांध रहे हैं उसे मिटाना आसान नहीं है और जल्द ही वो वक़्त आयेगा जब चौरंगे आलम में हज़रत इमाम हुसैन अ० की इमामत का डंका बजेगा।

यज़ीदी और उसके हवारियों को इस बात का वहम हो गया था कि वह हज़रत के रोफ़का और पैरवों की लाशों को टापों से पामाल करके बरबरीयत की ऐसी मिसाल कायम कर रहे हैं जिस के ख़ौफ़ से आइन्दा दुनिया में हज़रत इमाम हुसैन अ० का कोई नाम लेवा बाक़ी न रहेगा।



लेकिन वह यह नहीं जानते थे कि हज़रत के रोफ़का और पैरवों की पामाली और उनके एक-एक क़तरे खून से लाखों नहीं बल्कि करोड़ों ऐसे अक़ीदतमन्द पैदा होंगे जो दुनिया के कोने-कोने में हज़रत इमाम हुसैन अ० और उनके रोफ़का की कुर्बानियों पर फ़ख़्र करते हुए उनकी सना के नग़मों गाया करेंगे।

यज़ीदियों के सर पर भूत सवार था कि वह अहले हरम की तौहीन व तज़लील करके और काबिले परस्तिश ख़वातीन को अज़ीयतें देकर एक ऐसे वहशीयाना हरबे को इस्तेमाल में ला रहे हैं कि जिस की वहशत से आइन्दा किसी औरत को यज़ीदियों के जुल्म व जुर्म के खिलाफ़ आवाज़ उठाने की ज़ुरत न हो सकेगी और हमेशा के लिये बिला खौफ़ो ख़तर चैन से खिलाफ़त की बांसुरी बजाते रहेंगे।

गुमराह यज़ीदियों को यह मालूम न था कि जिन मोअज़िज़ ख़वातीन अहले हरम की तौहीन व तज़लील करके वह आज खुशियाँ मना रहे हैं, उनकी मसायब अंगेज़ियाँ एक दिन ऐसा रंग लायेंगी कि हर घर में उन बहादुर ख़वातीन की बेनज़ीर कुर्बानियों के न सिर्फ़ गुन गाये जाया करेंगे बल्कि आइन्दा दुनिया में जाबिर यज़ीद और उसके हवारियों का कोई ना लेवा भी बाक़ी न रहेगा।

मज़हबे इस्लाम के मौजूदा उरूज व तरक्की में हज़रत इमाम हुसैन अ० और उनके अज़ीज़ व अक़ारिब व रोफ़का की शानदार कुर्बानियों का राज़ मुज़म्मिर है। इस वजह से हज़रत का नाम तमाम दुनिया में आज भी इज़ज़त व ऐहतेराम से लिया जाता है और जब तक दुनिया कायम है शहादत और कुर्बानी के शैदाई

हज़रत इमाम हुसैन अ० की याद उसी खुलूस और सदाक़त से मनाते रहेंगे जिस तरह हम मना रहे हैं।

(इजलास यादगारे हुसैनी- मुनक्क़ेदा लखनऊ)

## कुवंर महेन्द्र सिंह हेदी

(सहर देहलवी)

तशनाकामी बेकसी ग़ुरबत फ़रेबे दुश्मनां  
नोके ख़न्जर, बारिशे पैकां बलाए खूंचकां

है दमें शमशीर से भी तेज़ तर राहे जहां  
हर क़दम इक मरहला है हर नफ़स इक इम्तेहां

ज़िन्दगी फिर अहले दिल की है अब आसानी तलब  
ये वह मय है जिसका हर क़तरा है कुर्बानी तलब

फ़ितरते आदम को कर देती है कुर्बानी बलन्द  
दिल पे खुल जाती है उसके नूर से हर राह बन्द

मेहरो मय होते हैं उसकी खाके पा से अरजुमन्द  
है फ़रिश्तों के गुलूए पाक से उसकी कमन्द

सर वह जिसमें ज़ौकें कुर्बानी हो झुक सकता नहीं  
सिर्फ़ तिनकों से बडा सैलाब रुक सकता नहीं

गुलशनें सिदक्रो सफ़ा का लालए रंगी हुसैन  
शम्में आलम मशअलें दुनिया चरागें दीं हुसैन

सर से पा तक सर खही अफ़सान-ए- खूनी हुसैन  
जिस पे शाहों की खुशी कुर्बान वो ग़मगीं हुसैन

मतलाए नूरे महो परवीं है पेशानी तेरी  
बाज लेती है हर इक मज़हब से कुर्बानी तेरी

जाद-ए आलम में है रहबर तेरा हर नक्शे कदम  
सायाए दामन है तेरी परवरिश गाहे ईरम

बाद-ए हस्ती का हस्ती से तेरी है कैफ़ो कम  
उठ नहीं सकता तेरे आगे सरे लौहो क़लम

तूने बख़्शी है वह रफ़अत एक मुश्ते ख़ाक को  
जो बड़ सरकरदगी हासिल नहीं अफ़लाक़ को

साथी-ए-बज़्में हकीक़त नग़मा-ए-साज़े मजाज़  
नाज़ के आइना-ए-रौशन में तस्वीरे नियाज़

दीद-ए-हक़ बीं, दिल-ए-आगाह, निगाह-ए-पाक़बाज़  
रौनके शाहे अजम ऐ ज़ीनते सुब्हे हिजाज़

तूने बख़्शी हर दिले मर्दा को शम्मे हयात  
जिसके परतों से चमक उठ्ठी ज़बीने कायनात

बारिशे रहमत का मुशदेह बाबे हिकमत की किलीद  
रोज़े रौशन की बशारत, सुब्हे रंगी की नवीद

हर निज़ामें कोहना को पैगामे आईने जदीद  
ऐ कि है तेरी शहादत अस्ल में मर्गे यज़ीद

तेरी मज़लूमी ने ज़ालिम को किया यूँ बे निशां  
दुंदता फिरता है उसकी हड्डियों को आसमां

हर गुले रंगी शहीदे खन्जरे जौरे खिज़ां  
हर दिले ग़मगीं हलाके नशतरे आहो फ़ुगां

---

## सरदार ज़ानी गुरमुख सिंह

हज़रत इमाम हुसैन अ० शहीदों के सरताज थे। हज़रत इमाम हुसैन अ० जैसे महापुरुष मैदाने जंग में मजबूरन लड़ाई करने आये हैं। आपने हैरत अंगेज़ तरीके से दिल हिला दिये और हमको इन्सानियत के गुर सिखाये। आज भी इमाम अ० के नक़शे क़दम पर चलने और उनके उसूलों को मानने की बेइन्तेहां ज़रूरत है क्योंकि

बदी और बुराई ने इन्सान को फिर से परेशान कर रखा है। जो सच्चाई हज़रत इमाम हुसैन अ० ने दुनिया के सामने रखी थी। सैकड़ों साल गुज़रे के बावजूद आज भी उसकी उतनी ही ज़रूरत है जितनी कि पहले थी। अगर हज़रत इमाम हुसैन अ० अमल करने का सबक न देते तो सैकड़ों साल गुज़रने के बाद भी ज़िन्दगी की तस्वीर नुमाया न होती।

## स्वतेजा सिंह

हज़रत इमाम हुसैन अ० ने आखरी दम तक नमाज़ नहीं छोड़ी, उनकी सही याद मनाने का तरीका यही है कि उनके उसूलों पर अमल किया जाये।

## महेन्द्र सिंह

हज़रत इमाम हुसैन अ० करबला के मैदान में शहीद होकर ये साबित कर दिया कि हक हमेशा ज़िन्दा रहेगा और बातिल फ़ना होने वाला है।

[[अलहम्दो लिल्लाह ये किताब कयामे इमाम हुसैन गैर मुस्लिमो की नज़र मे पूरी टाईप हो गई खुदा वंदे आलम से दुआगौ हुं कि हमारे इस अमल को कुबुल फरमाए और इमाम हुसैन फाउनडेशन को को तरक्की इनायत फरमाए कि जिन्होने इस किताब को अपनी साइट (अलहसनैन इस्लामी नैटवर्क) के लिये टाईप कराया।  
सैय्यद मौहम्मद उवैस नकवी 29.4.2015]]

## फेहरिस्त

क्रयामे इमाम हुसैन (अ.स.).....	1
गैर मुस्लिम बुद्धिजीवियों की नज़र में.....	1
अर्जे नाशिर.....	2
ईसाइयों का खिराजे अक्रीदत.....	4
मिस्टर जान लिविन्ग.....	4
मिस्टर वाशिंगटन औरंग.....	4
मिस्टर कारलायल.....	5
मिस्टर जेम्स काकरन.....	5
मिस्टर आरथर एन-विस्टन.....	6
मिस्टर परमेल पीटर प्रेग.....	7
सर फ्रेडरिक जे-गोल्ड.....	8
सर जार्ज टामस.....	9
डा० क्रिसटोफर डी विक्टर.....	10
डा- एच-डब्लू-बी-मोरनीऊ.....	11
लार्ड हेडले.....	11
मिस्टर जे-आर-राबिन्सन.....	13
मिस्टर डब्लू-सी-टेलर.....	14
जस्टिस आरनाल्ड.....	15
डाक्टर एडवर्ड सील.....	16
जर्मन डाक्टर मीऊर मांबैन.....	17



मिस्टर औसीवर्न.....	18
फ़ादर पलामिश एस-जे.....	19
कैप्टन एल-एच-नेबलेट जे-पी.....	20
मिस्टर जे-ऐ-सिम्सन.....	23
स्वामी कलजुगा नन्द मुसाफ़िर.....	25
गिबन .....	26
शिल्डर.....	27
डा० क्रिस्टोफ़र .....	28
के-सी-जान.....	28
के-एल-रलियाराम.....	28
डब्लू-डच-बरन.....	30
रिवर एंड फ़ादर पेले.....	31
जी-बी- एडवर्ड.....	31
एफ-सी- बेन्जामिन.....	32
एस गिलबर्ट.....	33
प्रोफ़ेसर ब्राऊन .....	33
प्रोफ़ेसर एन-व्हाईट .....	34
परसी साटिक्स .....	34
नतशे .....	35
वाल्टर फ़्रिंन्ज .....	35
प्रिंसपल सीन.....	36
मारकोटस .....	36
डाक्टर मुरकुस.....	37
आर-जे-विल्सन .....	37

यान-बेची-हान .....	38
वान क्रोहा.....	39
एफ-सी-ओडोनिल .....	40
कर्नल हैरीसन .....	40
कोशां फोहू.....	41
<b>हिन्दु दरबारे हुसैनी में .....</b>	<b>42</b>
पंडित जवाहर लाल नेहरू.....	43
महात्मा गांधी.....	44
डा० राजेन्द्र प्रसाद .....	44
सर राधा कृशनन .....	45
मिस्टर गोखले.....	46
पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त.....	46
बाबू पुरषोत्तम दास टण्डन .....	47
बी जी खैरो.....	47
डाक्टर रवीन्द्र नाथ टैगौर .....	48
प्रोफेसर रघुपति सहाय .....	50
पंडित गोपीनाथ अमन देहलवी.....	51
पंडित अमरनाथ जी .....	51
मिस्टर नारायन गुर्द.....	52
डा० जवाहर लाल रोहतगी एम-एल-ए.....	53
कुंज बिहारी लाल एडवोकेट .....	53
डा० एस-के-बनर्जी.....	54
डा० एस-वी-पशीम-बेकर .....	56
डा० राधा कुमार मुखर्जी .....	57

प्रोफेसर आत्मा राम एम-ए .....	60
प्रोफेसर विशम्भर नाथ सक्सेना एम-ए .....	62
प्रोफेसर एस-सी-सेन.....	63
प्रोफेसर राजकुमार शर्मा .....	64
प्रोफेसर बी-बी मोजमदार एम-ए.....	65
प्रोफेसर नापटा अमीका एम-ए .....	66
पंडित व्यास देव.....	67
पंडित चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु.....	69
दीवान बहादुर के-एम झवेरी.....	70
मुंशी प्रेमचन्द .....	71
स्वामी शंकराचार्य .....	72
बाबू काली बदआमबर जी नीशानाथ राय.....	73
ऐ-के-आचार्य .....	74
जे-आर गोडे एडवोकेट .....	75
लाला दीनानाथ .....	77
सी-एस-रंगा आर्य.....	77
हिज हाईनेस महाराजा जीवाजीराव सिंध्या.....	79
राजा महेश्वर दयाल सेठ.....	80
महाराजा सर हरकिशन प्रसाद.....	81
दीवान बहादुर हर बिलास शारदा.....	84
किशन प्रसाद.....	85
महाराजा होलकर आफ़ इंदौर .....	86
हिज हाईनेस सर नटवर सिंह.....	86
पंडित सुन्दर लाल.....	87

मेला राम फरानी.....	88
जी-आर-गोदी .....	89
राईट आनरऐबिल एम-आर-जियारकर .....	90
दीवान बहादुर कृष्ण लाल .....	90
डा० जे-ऐ-कोलाको.....	91
बाबू राजेन्द्र प्रसाद.....	92
महात्मा गांधी.....	92
श्री स्वामी गुंजानन्द.....	93
मिसेज़ सरोजनी नायडू.....	95
हुसैन अ० से सिक्खों की अक्रीदत.....	97
महाराजा जगजीत सिंह बहादुर .....	98
सरदार खनाँ सिंह, एम-ए .....	98
सरदार जसवंत सिंह एम-ए.....	99
सरदार करतार सिंह एम-ए-एल-एल-बी .....	101
सरदार सन्त सिंह .....	102
कुवंर महेन्द्र सिंह हेदी.....	106
सरदार ज्ञानी गुरमुख सिंह.....	109
स्वतेजा सिंह.....	110
महेन्द्र सिंह.....	110
फेहरिस्त.....	112